ऑल-टाइम ग्रेट क्लासिक्स
गुलिवर की यात्राएं
अंग्रेजी उपन्यास Gulliver's Travels का संक्षिप्त हिंदी रूपांतरण
जोनाथन स्विफ्ट
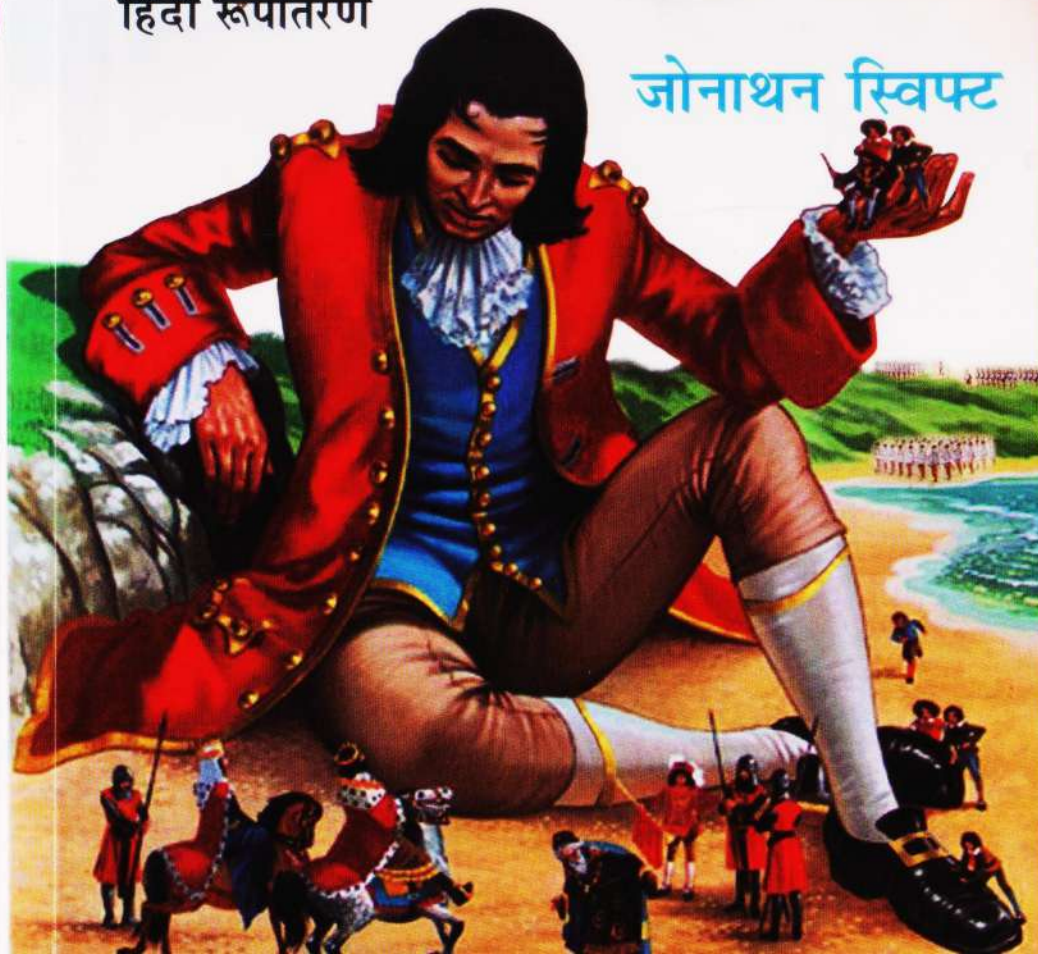
(ऑल टाइम ग्रेट क्लासिक्स)

गुलिवर की यात्राएं

जोनाथन स्विफ्ट की लोकप्रिय कृति

•

रूपांतर

अनीता गौड़

मनोज पब्लिकेशन्स

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :
मनोज पब्लिकेशन्स
761, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110084
मोबाइल: 09999476076, 09868112194,
08178823569, 08178854810
ईमेल : info@manojpublications.com
(For online shopping visit our website)
वेबसाइट : www.sawanonlinebookstore.com

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक की सामग्री तथा रेखाचित्रों के अधिकार '**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-84' के पास सुरक्षित हैं, इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल-डिजाइन, अंदर का मैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार वे स्वयं होंगे।
किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्यायक्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

ISBN: 978-81-310-2577-2

द्वितीय संस्करण : 2023

मुद्रक :
जय माया ऑफसेट
झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110095

गुलिवर की यात्राएं *: जोनाथन स्विफ्ट*

प्रकाशकीय

प्रतिस्पर्धा के इस युग में किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह लंबे उपन्यासों को पढ़ने की हिम्मत जुटा सके। लंबे उपन्यास जब लिखे गए थे तब पढ़ने के लिए लोगों के पास काफी वक्त होता था। खाली समय में अच्छा साहित्य पढ़ना ही उस समय मनोरंजन का मुख्य स्रोत था। लेकिन अब समय पूरी तरह से बदल गया है। अब पाठक ऐसी साहित्यिक सामग्री को खोजते हैं, जो छोटी, प्रभावी और चित्रों से अच्छी तरह सुसज्जित हो—कहानी को समझने में यह चित्रा मदद करते हैं। हमारी यह प्रस्तुति पाठकों की इन सभी मांगों को पूरा करती है।

एक सामान्य हिंदी पाठक को सामने रखते हुए हमने उपन्यास की भाषा को कठिन शब्दावली से बचाकर कथानक को सुगम रूप से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। कथानक को सुगम बनाने के लिए चित्रों से इस पुस्तक को सजाया गया है। उपन्यास के अंत में प्रत्येक अध्याय पर आधारित कुछ प्रश्न हैं, जिनका उद्देश्य पाठकों द्वारा स्वयं का परीक्षण करना है कि उन्होंने उपन्यास को कितनी एकाग्रता से पढ़ा है और उसके कथ्य को वे कितना आत्मसात् कर पाए हैं।

हमें विश्वास है कि अंग्रेजी उपन्यासों को पढ़ने के इच्छुक हिंदी भाषी पाठकों के लिए तो यह उपन्यास शृंखला उपयोगी होगी ही, साहित्य में रुचि रखने वालों की पर्सनल लाइब्रेरी की शेल्फ की भी शोभा बढ़ाएगी।

आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

❑❑

लेखक के बारे में

जोनाथन स्विफ्ट अंग्रेजी साहित्य के एक बहुत महान व्यंग्यकार थे। 30 नवंबर, 1667 को डब्लिन में इनका जन्म हुआ था। अपने जन्म से पहले ही पिता की मत्यु हो जाने के कारण अपने तीन चाचाओं की देखरेख व मार्गदर्शन में ही ये बड़े हुए। डब्लिन के टिन्टी कॉलेज में यह पढ़े, लेकिन पढ़ाई में कुछ ज्यादा अच्छा नहीं कर पाए। अंततः जून, 1688 में यह आयरलैंड छोड़कर लंदन चले गए। सर विलियम टैम्पल के लिए इन्होंने दस वर्षों तक सेक्रेटरी का कार्य किया। यह उस समय की बात थी जब इन्होंने कविताएं व निबंध लिखने शुरू किए। 'द बैटल ऑफ द बुक्स' व 'अ टेल ऑफ द टब' इनके पहले मुख्य हास्य-व्यंग्य थे–1704 में ये प्रकाशित हुए।

टैम्पल की मृत्यु के बाद 1699 में यह आयरलैंड लौटे, जहां ये पादरी बन गए। इन्होंने अपना लेखन कार्य यहां भी जारी रखा और आयरलैंड के साथ-साथ इंग्लैंड में भी बहुत प्रसिद्ध हुए। सन् 1721 में स्विफ्ट ने अपनी सबसे लोकप्रिय पुस्तक 'गुलिवर ट्रैवल्स' लिखनी आरंभ की और 1725 में इसे पूरा किया, जिसका प्रकाशन 1726 में हुआ। स्विफ्ट की रचनाएं हमारे झूठे अहंकार अपनी कमियों को छिपाते हुए अपनी उपलब्धि को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाने में विश्वास रखने की आदत की विवेचना करती हैं। स्विफ्ट का यह संदेश बिल्कुल स्पष्ट है कि दूसरों के अनुभवों व उपलब्धियों से सीख लेना ही हम सबके लिए बहुत आवश्यक है।

अपने जीवन के अंतिम चरण में यह मानसिक बीमारी की गिरफ्त में आ गए। 1739 में इन्हें लकवे का दौरा पड़ा। इसके बाद ये तब तक बिस्तर पर पड़े रहे, जब तक मृत्यु ने आकर इन्हें सारे मानसिक संतापों से मुक्त नहीं कर दिया। 19 अक्टूबर, 1745 में इन्होंने अपनी अंतिम सांसें लीं।

❑❑

अनुक्रम

फिर उसने अपने रसोइए और बटलर को मेरे लिए खाना-पानी लाने का हुक्म दिया। मेरी ओर मीट की 22 गाड़ियां और मिट्टी के बरतन से भरी शरबत की 10 गाड़ियां भेजी गईं। मैंने मीट की एक-एक गाड़ी 2 या 3 बारी में पूरी मुंह में भरकर खत्म कर दी। शरबत की एक-एक गाड़ी तो केवल एक ही घूंट में खत्म ही गईं।

प्रथम भाग

1

मेरी पहली यात्रा

मेरा जन्म नॉटिंगहैमशीयर के एक परिवार में हुआ था। मैं पांच पुत्रों में तीसरे स्थान पर था। किशोरावस्था तक मेरी शिक्षा कैम्ब्रीज में पूरी हुई, परंतु मेरे पिता मुझे वहां नहीं रख पाए, क्योंकि वे बहुत गरीब थे। इसलिए 17 साल की उम्र में चिकित्सक बनने के लिए मुझे लंदन भेज दिया गया। इस प्रकार अध्ययन करते हुए मैंने कुछ कमाया भी। मेरे पिता भी मुझे समय-समय पर कुछ पैसे भेजते रहते थे, जिसका प्रयोग मैंने समुद्र के पास जीवन व्यतीत करने के लिए कुछ जरूरी बातों को सीखने में किया, क्योंकि मुझे आशा थी कि मैं भी एक दिन यात्रा करूंगा। 4 वर्षों तक श्रीमान बेट्स के साथ कार्य करते हुए तथा अपने पिता व अंकल जॉन की आर्थिक सहायता से मैंने 3 वर्ष तक लाइडन से भौतिकी की शिक्षा प्राप्त की।

श्रीमान बेट्स ने बाद में मुझे एक स्वैलो नामक जहाज पर डॉक्टर की नौकरी पर लगवा दिया। मैं इस नौकरी में साढ़े तीन वर्ष तक रहा। इसी दौरान मैंने कुछ छोटी-मोटी समुद्री यात्राएं भी कीं। फिर मैंने डॉक्टर के रूप में अपना अभ्यास प्रारंभ किया और लंदन में ही बसने का निर्णय लिया। श्रीमान बेट्स अपने कुछ मरीज मेरे पास भेज देते थे, क्योंकि वह बहुत मददगार थे। जल्द ही मैंने श्रीमती मैरी बर्टन से विवाह कर लिया और एक घर खरीद लिया, जहां हम दो वर्षों तक बहुत खुशी-खुशी रहे। लेकिन जब श्रीमती बेट्स का देहांत हुआ, तो मेरा व्यापार मरीजों की संख्या कम हो जाने के कारण समाप्त होने लगा।

तब मैंने निर्णय लिया कि मैं एक बार फिर समुद्र की ओर जाऊंगा। अगले छह वर्षों तक मैं दो जहाजों में डॉक्टर रहा। मैंने बहुत सी समुद्री यात्राएं कीं, बहुत सी पौराणिक व आधुनिक किताबें समुद्र के किनारे पढ़ीं। इन्हीं यात्राओं के दौरान मैंने विदेशियों के बारे में बहुत-सी चीजें जानीं और सीखीं। मैंने

उनकी भाषा भी सीखी, क्योंकि मेरी याददाश्त बहुत अच्छी थी। मैंने वापस लंदन अपनी पत्नी और परिवार के पास जाने का निर्णय लिया, क्योंकि पिछली कुछ यात्राएं अनुकूल साबित नहीं हुई थीं। समुद्र के पास मरीज आसानी से मिल जाएंगे, इस उम्मीद से मैंने अपना घर बंदरगाह वाले शहर के पास बदल लिया, किंतु दुर्भाग्यवश वहां भी पर्याप्त कार्य नहीं मिला।

लंदन में तीन साल बिताने के बाद 4 मई, 1699 को मैं वापस समुद्र की ओर चला गया। ब्रिस्टल से ऐंटीलोप नामक जहाज दक्षिणी समुद्र की ओर गया। पहली बार सब चीजें ठीक हो गईं, तभी एक भयंकर तूफान आया और हवाएं हमें बहाकर गलत रास्ते पर ले गईं। 5 नवंबर को हमारे नाविक ने एक बड़ा पत्थर देखा। उस दुर्घटना से बचने का हमने बहुत प्रयास किया, किंतु हम उस पत्थर पर जा गिरे, क्योंकि हवाएं बहुत ताकतवर थीं। अंत में, तूफान में जहाज टूट गया, मेरे सहित जहाज के अन्य छह सदस्यों ने उस पत्थर व टूटे हुए जहाज को पार करने के लिए समुद्र में अपनी-अपनी नाव उतारीं। लेकिन थोड़ी दूरी पर ही मेरी नाव हवा के तेज झोंके से पलट गई। मुझे यह भी नहीं पता चला कि दूसरी नाव पर जहाज के अन्य सदस्यों का क्या हुआ। मैं पानी में गिर गया, हवाएं और लहरें मुझे बहाकर दूर ले गईं। मैंने पानी के बाहर अपना सिर रखने का बहुत प्रयास किया, किंतु मैं बहुत थक चुका था।

एक लंबे समय बाद मेरे पैरों ने समुद्र में रेत को छुआ, तब मैं खड़ा हो सका। मैं समुद्र से निकलकर जमीन पर आ गया। इतने में तूफान भी शांत हो चुका था। एक घंटा घूमने के बाद भी मुझे कोई कस्बा, कोई गांव, कोई व्यक्ति नहीं मिला। मैं इतना थक चुका था कि और चलना मेरे लिए बिलकुल मुश्किल हो गया था। जमीन पर लेटते ही मेरी आंख लग गई। जब मैं उठा तो सुबह हो चुकी थी—शायद मैं 9 घंटों तक तो अवश्य सोया ही था। मैं अपनी कमर के बल पर लेटा हुआ था और चमकता हुआ सूरज मेरे सिर के ऊपर था। मैंने उठकर बैठने की कोशिश की, लेकिन मैं उठ नहीं सका। मेरे हाथ और पैरों पर रस्सियां बंधी थीं, जो जमीन पर गड़ी डंडियों से बंधी थीं, जिसमें मेरे बाल भी बंधे थे। मैं केवल ऊपर ही देख पा रहा था। जैसे-जैसे सूरज तपने लगा, वैसे-वैसे मेरी बेचैनी बढ़ने लगी।

□□

2

अद्‌भुत भूमि पर

कुछ समय बाद मुझे कुछ आवाजें सुनाई दीं, पर मैं समझ नहीं पाया कि वो क्या थीं, किसकी थीं। तभी मुझे मेरे बाएं पैर पर कुछ चलता हुआ महसूस हुआ। धीरे-धीरे वह मेरी छाती के पास पहुंचने लगा। मैंने अपनी आंखें नीचे की ओर झुकाईं, जितनी कि मैं झुका सकता था। मैं उस बौने व्यक्ति को देखकर आश्चर्यचकित हो गया। वह केवल छह इंच का था और उसने हाथों में तीर-कमान पकड़ा हुआ था। तभी मैंने महसूस किया कि लगभग 41 बौने मेरे ऊपर चल रहे थे। मैं हैरानी से चिल्लाया। वे सभी बौने भाग गए। मेरी जोरदार चीख से वह सभी डर गए थे, उनमें से कुछ तो मेरे ऊपर से कूदे और गिर गए। मेरे शांत होते ही वह सब वापस आ गए। उनमें से एक बौना मेरे पास आकर मेरे चेहरे को देखने की कोशिश करने लगा।

मैंने अपने आपको मुक्त करने के लिए बहुत प्रयास किया, क्योंकि मुझे बहुत ज्यादा बेचैनी महसूस हो रही थी। अपने आपको मुक्त करने के लिए मैंने अपनी पूरी ताकत लगा दी। आखिरकर मैं अपने बाएं हाथ को मुक्त करने में सफल हो गया। जब मैंने अपने बालों को झटका, तो उनमें से कुछ मेरे सिर से भी बाहर आए। अब मैं थोड़ा-बहुत अपने सिर को हिला सकता था। मुझे उन बौने लोगों के चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं। तभी मेरे बाएं हाथ पर चोट लगी। मेरी चमड़ी में जैसे हजारों सुइयां घुसी हुई थीं। मैंने अपने हाथ की ओर देखा, उसमें छोटे-छोटे तीर घुसे हुए थे। अब मैं अपने सिर को थोड़ा झुकाने की स्थिति में था। जब मैंने उन्हें पकड़ने की कोशिश की, तो वह सब जल्दी से भाग गए। तभी मेरे बाएं हाथ पर लगभग सौ तीर आकर लगे। जल्दी ही कुछ और तीर मारे गए, जिनमें से कुछ मेरे मुंह पर आकर टकराए और चमड़ी में धंस गए। मैं डर गया। मैंने चुपचाप रहते हुए रात होने का इंतजार करने का निर्णय लिया।
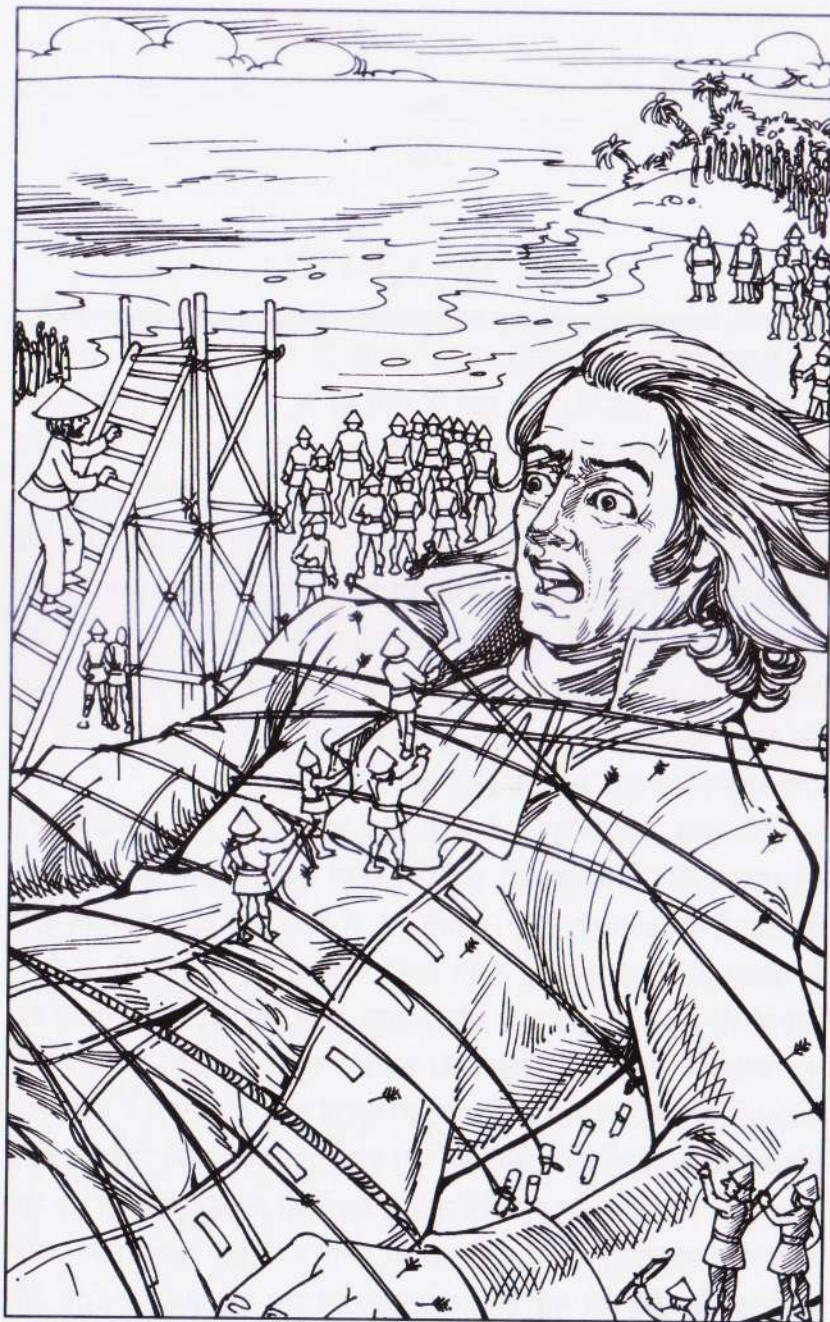
मैंने अपना सिर हिलाया तो देखा, मुझसे 4 फीट की दूरी पर कुछ लोग एक मंच जैसा कुछ उठाए खड़े थे।

तकरीबन एक घंटे तक मुझे कुछ ठोकने की आवाज सुनाई देती रही। जब बहुत कोशिश के बाद मैंने अपना सिर हिलाया, तो देखा मुझसे 4 फीट की दूरी पर कुछ लोग एक मंच जैसा कुछ उठाए खड़े थे। तभी कुछ बौने लोग उस पर कूदे और खड़े हो गए। अब वो मुझे देख सकते थे। लकड़ी के मंच पर एक दूसरा व्यक्ति चढ़ा, वो महत्वपूर्ण लग रहा था। उसने मुझसे बात करनी शुरू की। भले ही मैं कई भाषाएं जानता था, पर मुझे उनका एक शब्द भी समझ नहीं आया। उसने अपने हाथ हिला-हिला कर बहुत समय तक बात की। मैंने अपने खाली हाथ को मुंह में डालकर यह इशारा किया कि मुझे भूख लगी है। तभी वह उस मंच से कूद पड़ा। वे लोग मेरे चारों तरफ घूमने लगे। उन्होंने मुझे खाने के लिए पके हुए जानवर दिए। वह बहुत छोटे थे, इसलिए मैं उन्हें एक ही बार में खा गया। उन लोगों ने मुझे रोटी भी दी। सभी रोटियां मटर के बराबर थीं। मैंने सभी रोटियां एक साथ मुंह में डाल लीं। तभी वह पीने के लिए भी कुछ लाए। वह बहुत स्वादिष्ट पेय था। अपनी बड़ी-बड़ी आंखों व खुले मुंह से वह लोग मुझे खाना खाते हुए देख रहे थे, क्योंकि यह खाना उन लोगों के लिए ढेर सारा था। जब उन्होंने मुझे एक बड़े दैत्य की तरह खाते-पीते हुए देखा, तो वह खुशी से मेरी छाती पर नाचने लगे।

पहले मेरे दिमाग में आया कि एक साथ 40-50 लोगों को हाथ में उठाऊं और जमीन पर पटक दूं, लेकिन तभी उनका मुझे खाना खिलाने का एहसान याद आया। कुछ समय बाद, राजमहल से उसी पद का व्यक्ति मुझसे मिलने आया। वह सीढ़ी की सहायता से ऊपर चढ़ा और मेरी छाती पर कूदकर मेरे मुंह के पास आ गया। मुझसे बात करने के लिए उसने एक ही दिशा की ओर इशारा करते हुए चिह्न बनाए। कुछ समय बाद मुझे समझ आया कि वह मुझे अपनी राजधानी की ओर ले जाना चाहते थे। फिर मैंने अपने हाथों से इशारा किया कि वह मेरी रस्सियां खोल दें। लेकिन तभी एक व्यक्ति ने 'नहीं' का इशारा करते हुए अपना सिर हिलाया। उसने यह भी इशारा किया कि मुझे एक कैदी की तरह राजधानी ले जाया जाएगा। उसने मुझे यह भी बताया कि अगर मेरा व्यवहार अच्छा रहा, तो वह मुझे खाना-पीना देंगे। मैं उनकी सभी बातें मान गया, क्योंकि मैं मजबूर था। उन्हें जो सही लगे, वह करें।

राजधानी वहां से आधा मील की दूरी पर थी। मुझे वहां ले जाना उनके लिए बहुत कठिन था, लेकिन वह लोग मशीनी कार्य में बहुत निपुण थे।

उन्होंने मुझे ले जाने के लिए पहियों के ऊपर एक मशीन तैयार की। इंजन मेरे समानांतर लाकर खड़ा कर दिया गया। फिर उन्होंने बहुत सारी पट्टियों से मेरे शरीर को बांध दिया। इन पट्टियों से बहुत सारे कुंदे बंधे थे। मेरे ईद-गिर्द 1 फुट के 8 खंभे गड़े थे। उन खंभों से लगी हुई चरखियों की मदद से 900 ताकतवर लोगों ने उन रस्सियों को खींचा। उन्हें मुझे उस गाड़ी पर खींचने में 3 घंटे लगे। जब मैं उस गाड़ी पर था, तब राजा के 1500 घोड़े उसे खींचकर सड़क पर लाए।

यह यात्रा पूरे दिन चली। हमने रातभर आराम किया। 500 सैनिकों में से आधों ने तीर-कमान पकड़े हुए थे। वो मुझ पर नजर रखे हुए थे। दोपहर को शहर के मुख्य द्वार से 200 गज की दूरी पर जाकर गाड़ी रुकी। वहां एक पुराना मंदिर था। उन्होंने इशारे से बताया कि यह मेरा नया घर है। उस मंदिर के अंदर मैं अपने हाथ-पैरों पर स्वयं जा सकता था, क्योंकि उस मंदिर का द्वार 4 फीट ऊंचा और 2 फीट चौड़ा था। दरवाजे के दोनों ओर जमीन से 6 इंच की ऊंचाई पर खिड़कियां थीं। तभी कुछ व्यक्ति मेरे पास आए और उन्होंने मेरे बाएं पैर में जंजीरें बांध दीं, वे जंजीरे बहुत पतली थीं। लेकिन उन्होंने एक साथ 91 जंजीरें बांधीं, जो मिलकर बहुत मजबूत हो गई थीं। राजा के साथ शहर के सभी लोग मुझे देखने आए। कम-से-कम 10,000 लोग सीढ़ी के सहारे मेरे ऊपर चढ़े। जब कर्मियों को लगा कि अब मैं जंजीरें नहीं तोड़ सकता, तब उन्होंने मेरे हाथों और पैरों की रस्सियां काट दीं, जिससे मैं खड़ा हो सका। मैं अधिक दूरी तक अभी भी नहीं चल सकता था, क्योंकि मेरे बाएं पैर पर बंधी जंजीरें केवल 6 फीट ही लंबी थीं।

❑❑

3

राजा से मेरी मुलाकात

मैंने खड़े होकर पूरा शहर तथा उसके आसपास के खेत देखे। वो एक बहुत बड़े बाग जैसे लग रहे थे, जिसके बीचोबीच मानो बहुत-सी गुड़ियों के घर थे। वह खेत कभी न खत्म होने वाले बगीचे की तरह दिख रहे थे। सबसे लंबा पेड़ भी 7 फीट से अधिक ऊंचा नहीं था।

टॉवर से उतरते ही राजा घोड़े पर सवार होकर मेरी ओर बढ़ा। मुझ जैसा चलता-फिरता पहाड़ उस छोटे से घोड़े ने कभी नहीं देखा था, इसलिए उसके लिए यह बहुत खतरनाक साबित होने वाला था। तभी वह अपनी निगाह से चूका और अपनी पिछली टांगों पर सीधा खड़ा हो गया। सभी सेवक घोड़े को काबू करने के लिए दौड़ पड़े, लेकिन बहादुर राजा अपने स्थान पर ही खड़ा रहा। उसने नीचे उतरकर मुझे चारों तरफ से बड़ी हैरानी से देखा।

फिर उसने अपने रसोइए और बटलर को मेरे लिए खाना-पानी लाने का हुक्म दिया। मेरी ओर मीट की 22 गाड़ियां और मिट्टी के बरतन से भरी शरबत की 10 गाड़ियां भेजी गईं। मैंने मीट की एक-एक गाड़ी 2 या 3 बारी में पूरी मुंह में भरकर खत्म कर दी। शरबत की एक-एक गाड़ी तो केवल एक ही घूंट में खत्म ही गईं। मैं सारा भोजन समाप्त करके जमीन पर लेट गया ताकि राजा को देख सकूं। मेरे अनुमान से इस देश के हर व्यक्ति की लंबाई 6 इंच से अधिक नहीं थी। किंतु राजा इन सबमें से मेरे नाखून जितना अधिक लंबा था। वह ताकतवर तथा आकर्षक था। हमने एक-दूसरे से बात करने का प्रयास किया, पर हम एक दूसरे को समझ नहीं पाए। मैंने सभी भाषाएं बोलने का प्रयास किया, जितनी कि मैं जानता था, किंतु राजा इनमें से कोई भाषा नहीं जानता था।

राजा दो घंटे बाद चला गया। कोई मुझे परेशान न करे, इसलिए राजा ने अपने कुछ सैनिक इस कार्य में लगा दिए। लेकिन उत्सुक भीड़ मुझे देखने

मेरी ओर मीट की 22 गाड़ियां और मिट्टी के बरतन से भरी शरबत की 10 गाड़ियां भेजी गईं।

के लिए बार-बार मेरे पास आ रही थी। कुछ लोगों ने मुझ पर तीर चलाए, जिनमें से एक तीर मेरी बाईं आंख को बारीकी से छू गया। कार्य पर लगे 6 लीडरों को कर्नल ने पकड़ने का आदेश दिया। सैनिकों ने उन्हें पकड़कर बांध दिया। तभी सैनिकों ने उन्हें मेरी और धक्का दे दिया। मैं उन्हें सजा दूं, ऐसा वह सैनिक चाहते थे।

तभी मैंने अपनी जेब में उनमें से पांच को डाल दिया। मैंने छठे व्यक्ति को पकड़ा और उसे अपने मुंह के पास ले आया। सभी लोग डर गए, जो मुझे देख रहे थे। और वह लाचार व्यक्ति रोने लगा। तभी मैंने अपना चाकू निकाला और उसकी रस्सियां काट दीं। मैंने उसे बहुत आराम से नीचे उतार दिया और वह जल्दी से भाग खड़ा हुआ। भीड़ के सभी लोग खुश होकर तालियां बजाने लगे। उन बाकी 5 लोगों के साथ भी मैंने यही किया। मेरा उदारतापूर्ण व्यवहार और दया देखकर लोग बहुत प्रसन्न हुए।

क्योंकि उन लोगों के पास इतना बड़ा पलंग नहीं था, इसलिए पिछले दो सप्ताह से मुझे जमीन पर ही सोना पड़ रहा था। इस सप्ताह राजा ने मेरे लिए बड़ा पलंग बनवाया, जिसमें उनके 600 पलंग बन सकते थे। मेरे एक पलंग को तैयार करने के लिए उन्होंने 150 बिस्तर एक साथ जोड़े और सिले। कुछ हद तक एक आरामदायक बिस्तर तैयार करने के लिए चार तह एक के ऊपर एक सिली गईं। इसी तरह मेरे लिए चादर भी तैयार की गई।

इसी बीच मेरा क्या किया जाए, इसकी लंबी चर्चा राजा और उसकी सरकार के बीच चली। मेरे छूट जाने तथा उसके बाद के परिणाम पर भी उनकी बहस हुई। मुझे भोजन देने के कारण उन लोगों के लिए पर्याप्त भोजन भी नहीं बचेगा और उनका बहुत सारा पैसा भी खर्च होगा, इसलिए मुझे भूख से तड़पा कर मार डालने के साथ-साथ कुछ अन्य सदस्यों ने जहर वाले तीर से मुझे मार देने का सुझाव भी दिया। मैं भी बहुत चिंतित था। "हम इसके मरे हुए शरीर का क्या करेंगे? लंबे समय तक यह बदबू करेगा और यह बहुत बड़ा भी है, यह हमारे लोगों को बीमार भी कर देगा," उनमें से किसी का विचार था।

कुछ सैनिक ऐसी ही एक बैठक के दौरान बैठक घर तक गए और सदस्यों से कुछ कहने की अनुमति ले ली। जिन छह व्यक्तियों ने मुझ पर तीर चलाए, उनका क्या हुआ? उन सैनिकों ने राजा को एक बार फिर अपने
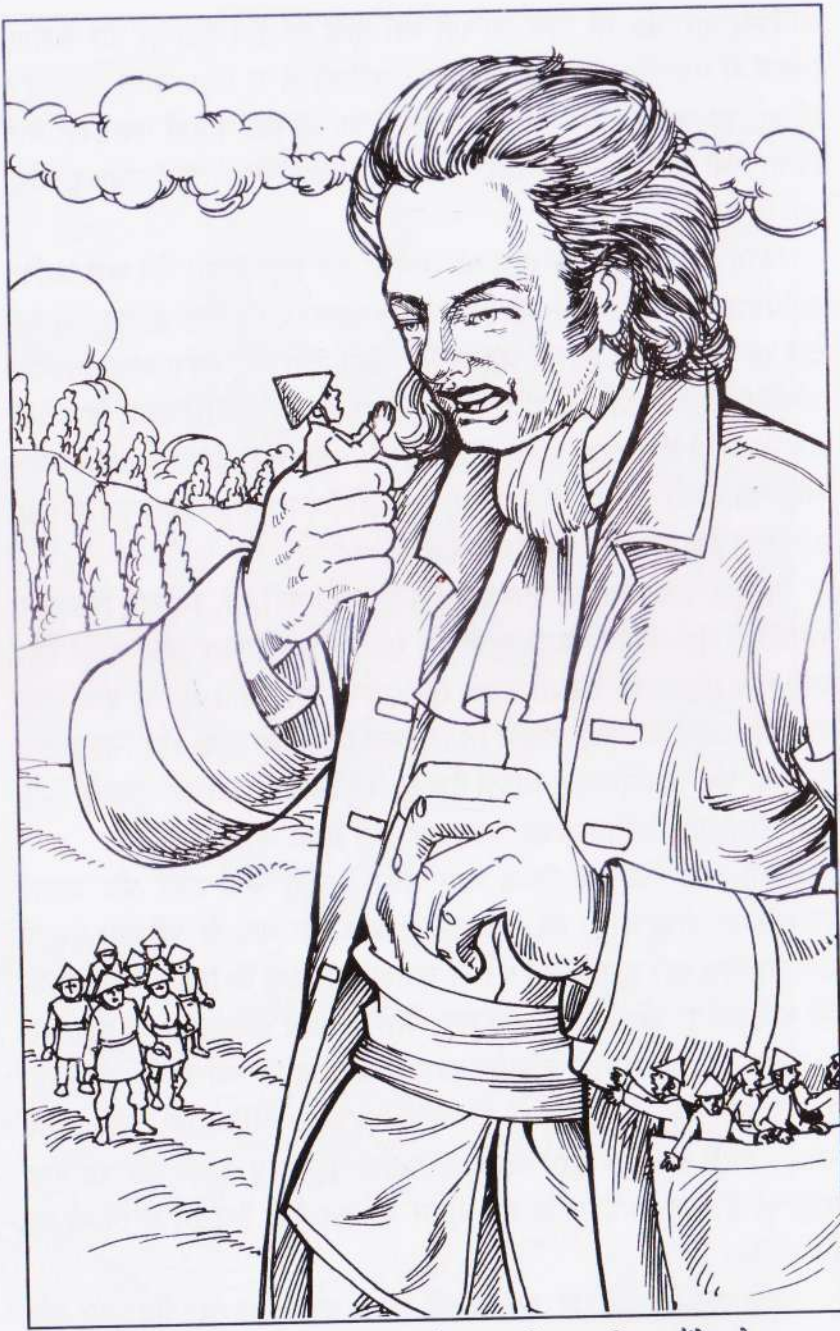
तभी मैंने अपनी जेब में उनमें से पांच को डाल दिया। मैंने छठे व्यक्ति को पकड़ा और उसे अपने मुंह के पास ले आया।

विचारों के बारे में बताया। सब कुछ सुनने के बाद राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मुझे जिंदा रखने का निर्णय लिया।

900 गज के भीतर के सभी गांव वालों को मेरे लिए रोजाना का भोजन उपलब्ध करवाने का आदेश दिया गया। इस भोजन के लिए धनराशि राजकोष में से देने का हुक्म भी दिया गया। मेरी देखरेख के लिए 600 व्यक्तियों को लगाया गया। मेरे घर के आसपास उनके रहने के लिए टैंट लगाए गए। उन्होंने मेरी देखरेख के लिए सेवक भी प्रदान किए। 300 दर्जियों को मेरे कपड़े बनाने का आदेश दिया गया। मुझे इस स्थान की भाषा सिखाने के लिए राजा ने छह विद्वानों को इस कार्य में लगा दिया। मैं तीन हफ्तों के पाठ के बाद बहुत कुछ समझ और बोलने लगा था। मुझे पता चला कि इस देश का नाम लिलीपुट है तथा इस देश के नागरिकों को लिलीपुटीन कहते हैं। राजा के सामने मैंने अपने मुक्त होने की इच्छा भी व्यक्त की। उनके प्रशासन ने कहा कि यह केवल अदालत के सुझाव पर निर्भर करता है। प्रशासन के सदस्यों को मेरी स्वतंत्रता से कोई आपत्ति नहीं होगी, अगर मैं उनके साथ अच्छे से व्यवहार करूंगा तो।

❑❑

4

गहन खोज

एक दिन राजा ने मुझे कहा कि मैं उसके अधिकारियों द्वारा ली जाने वाली जेब की तलाशी के लिए बुरा न मानूं। उन्होंने मुझे विश्वास दिलवाया कि जब भी मैं उनका देश छोड़कर जाऊंगा, वह मेरा सारा सामान वापस कर देंगे। तलाशी का हुक्म जारी हुआ। मेरी जेब में अंदर जाने तथा जो सामान मिले, उसकी सूची तैयार करने का आदेश दो तलाशी अधिकारियों को दिया गया। मैंने उन्हें अपने हाथ में उठाया और एक-एक करके जेब में डाल दिया। वह कलम, कागज व स्याही सब अपने साथ ले गए। केवल एक निजी जेब को छोड़कर जो उनकी नजर से चूक गई थी, उन्होंने बाकी सब जेबों की तलाशी ले ली। मैं भी वह निजी जेब उन्हें दिखाना नहीं चाहता था। अपना कार्य समाप्त होते ही उन्होंने मुझे वापस जमीन पर उतार देने के लिए कहा। वह सूची उन्होंने अपने प्रशासन को सौंप दी। बाद में अंग्रेजी में मैंने उस सूची को अनुवादित किया। मैंने यहां दुबारा इसे अपने श्रोताओं को समझने के लिए प्रस्तुत किया–

'हे राजा, इस पर्वतीय मानव के कोट की दाईं जेब से हमें केवल एक फटा हुआ कपड़ा मिला, जो इतना बड़ा था कि आपके सभा घर का कालीन बन सकता था। पर्वतीय मानव की बाईं जेब से हमें इंजन जैसा कुछ मिला, जिसके ऊपर 20 लंबे खंभे बने हुए हैं, जिससे शायद यह अपने बालों में कंघा करता होगा।

'इसकी कमर की दाईं तरफ (उनका अर्थ मेरी पैंट से था) हमने लगभग किसी व्यक्ति जितनी लंबाई का लोहे का एक खोखला स्तंभ देखा, जो उस स्तंभ से भी बड़े लकड़ी के एक टुकड़े से बंधा था। स्तंभ के एक तरफ लोहे के बड़े-बड़े टुकड़े अद्भुत आकार में कटे हुए जड़े थे। हमें इसका उद्देश्य समझ नहीं आया। इसी तरफ छोटी-छोटी जेबों में सफेद व लाल धातु के

बहुत से गोल व समतल टुकड़े भी पड़े हुए थे। हम दोनों के लिए वह टुकड़े उठाना बहुत कठिन था, क्योंकि वह बहुत भारी थे। बाईं जेब में भिन्न आकार के दो स्तंभ मिले। हम उसकी जेब के बिल्कुल निचले भाग में थे, इसलिए दोनों स्तंभ के ऊपरी भाग पर हम नहीं पहुंच पाए। उनमें से एक ढंका हुआ था। हमने उन दोनों इंजन में लगी एक अजीब-सी चमकीली प्लेट दिखाने का आदेश दिया, क्योंकि हमें लगा कि वह खतरनाक इंजन हो सकते हैं।

'उसकी सबसे छोटी जेब से हमने एक बहुत बड़ी चमकीली चेन लटकती हुई देखी, जिसके भीतर हम नहीं गए। इस चेन के अंत में एक बहुत बढ़िया इंजन था, जिसे हमने उसे पूरा दिखाने का आदेश दिया। वह आधा रजत व आधा पारदर्शी धातु से बना भूमंडल जैसा दिख रहा था। हमने उसके पारदर्शी भाग पर कुछ अजीब से अंक देखे। उसने हमारे कान के पास उस इंजन को रखा, जिससे बहुत शोर हुआ। हमें लगा कि वह जिस भगवान की पूजा करता है यो तो वह है या फिर कोई अजीब-सा जानवर। उसने हमें बताया कि उसने कुछ भी करने से पहले विचार कर लिया था, इसलिए हमने उसके दूसरे विचार पर विश्वास कर लिया था।

'किसी अजीब से जानवर की चमड़ी से बना कमरबंद हमने उसकी कमर पर देखा। कमरबंद की बाईं ओर हमने 5 लोगों की लंबाई जितनी लटकी तलवार देखी। वहीं कमरबंद की दाईं ओर हमने दो कक्षों में विभाजित झोला देखा। उसके एक कक्ष में बहुत सारे भूमंडल व धातु से बनी कुछ गेंदें थीं। दूसरे कक्ष में काले गेहूं का ढेर था, जिसका बिल्कुल भी वजन नहीं था।'

राजा ने मुझे सभी चीजें उनके हवाले करने का आदेश दिया। उसने मुझे सबसे पहले मेरी तलवार के लिए कहा, जो मैंने बाहर निकाली। उसका कुछ हिस्सा अभी भी चमक रहा था, जबकि बाकी हिस्से पर समुद्र के पानी से जंग लग गया था। मैंने उसे घुमाकर अपने हाथ में पकड़ लिया। उन सबकी आंखें सूरज की परछाई से झपकीं और उन सबके बीच डर तथा आश्चर्य के कारण शोर मच गया। मुझे लगा कि राजा उन सबसे थोड़ा कम ही डरा था। राजा ने मुझे उसे जमीन पर रखने के लिए कहा। फिर उसने लोहे के उस खोखले स्तंभ यानी कि मेरी जेब में रखी बंदूक की मांग की। मैंने उसे बाहर निकालते ही राजा से उसके प्रयोग की एक झलक दिखाने की अनुमति मांगी, जिसके लिए वह राजी हो गया। मैंने उसमें बारूद भरा और हवा में निशाना छोड़

दिया। उसकी आवाज और दहशत से 100 से भी अधिक व्यक्ति जमीन पर ऐसे गिरे, जैसे उन्हें मार दिया गया हो। राजा भी कुछ समय तक उस झटके से बाहर नहीं आया, किंतु वह अभी भी खड़ा हुआ था। मैंने भी बंदूक जमीन पर रख दी। मैंने राजा को गोलियों का थैला व बारूद सौंप दिया, लेकिन इस चेतावनी के साथ कि वह इस सबको आग से दूर रखे। मैंने अपनी घड़ी भी उसे दे दी। वह उसे देखने को बहुत उत्सुक था। उसमें से आने वाली लगातार आवाज से वह हैरान था। अपने विद्वानों से उसने इस इंजन के बारे में उनकी राय मांगी। मुझे लगा कि वह सब परस्पर एक राय नहीं बना पा रहे थे। फिर मैंने अपना चाकू, रेजर, रूमाल, कंघा, सिक्के व सोना सब जमीन पर रख दिया। शरबत, बंदूक तथा तलवार को छोड़कर राजा ने मुझे सब वापस लौटा दिया। उसके प्रशासन के लोग अपने गोदाम तक यह सारा सामान गाड़ी में ले गए।

उनकी खोज से मेरी एक गोपनीय जेब बच गई थी। इसमें मेरा चश्मा था। क्योंकि मेरी नजरें कमजोर थीं, इसलिए मैं नहीं चाहता था कि वह खराब या गुम हो। मैं लिलीपुट में अपने अच्छे व्यवहार के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गया था। राजा, रानी, न्यायालय के सदस्य, सेना के साथ-साथ आम जनता के बीच भी मैंने अच्छी खासी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी।

❑❑

5

नियम व अधिनियम

मैंने लोगों को दिखाने का प्रयास किया कि मैं एक अच्छे दिलवाला और दयालु व्यक्ति हूं। मैंने बच्चों को अपने बालों में लुका-छुपी का खेल खेलने दिया। कई बार मैंने अपने हाथों में 6 से 7 लोगों को उठाकर नाचने का मौका दिया। मेरे मनोरंजन के लिए राजा ने नर्तक, गायक व कलाकार मंगवाए। मुझे रज्जुनर्तक सबसे अधिक पसंद आए। जमीन से बहुत ऊपर वो एक पतली-सी रस्सी पर कूदते और भागते थे। सरकारी पदों पर कार्य करने वालों के लिए यह रज्जुनर्तक एक परीक्षा थी। जो नर्तक सबसे अच्छी कूद लगाता, उसे अच्छी नौकरी मिलती। सभी मुख्य सरकारी कर्मचारियों को यह रज्जुनर्तन अवश्य करना पड़ता था। अपनी नौकरी को बचाए रखने के लिए उन्हें नृत्य में बेहतर ही रहना होता था।

अब मुझसे लोग ज्यादा नहीं डरते थे। इस कैद से मुक्त करने के लिए हर बार मेरे पास आने वाले प्रशासन के लोगों से मैं अनुरोध करता था। अंत में कोर्ट के सामने मेरा मुद्दा भी रखा गया। केवल एक सदस्य-स्काईरेश बोलोगम को छोड़कर सभी सदस्यों ने मुझे मुक्त करने का निर्णय लिया। उस व्यक्ति की मुझसे क्या दुश्मनी थी, मैं समझ नहीं पाया। मैंने उसे अपने प्रति हमेशा ही कड़वा रुख अपनाए देखा था। अंत में, बहुत समझाने के बाद वह मान गया, किंतु इस शर्त पर कि मुझे कुछ नियम और कानूनों का पालन करना होगा।

कोर्ट के समक्ष उसने अपने तैयार किए हुए नियम और कानून पेश किए। सभी सदस्य मान गए और राजा ने उसे मुझे यह संदेश देने के लिए कहा। वह अपने दो मंत्रियों के साथ मेरे पास आया। मुझे सभी नियम व कानून मानने पड़ेंगे, यह उनकी शर्त थी। मेरे सामने सभी नियम पढ़े गए। मुझे कसम खाने के लिए कहा गया कि मैं इन कानूनों में बंधा हुआ हूं। सभी नियम यह थे-

1. हमारा देश छोड़ने से पहले पर्वतीय मानव को हमसे पूछना होगा।
2. हमारे शहर में जाने से पहले इसे हमसे स्वीकृति लेनी होगी। जब भी यह शहर में प्रवेश करेगा, सभी लोग अपने घरों के अंदर चले जाएंगे।
3. यह केवल हमारी सड़कों पर ही चल सकता है—खेतों में यह चल और लेट नहीं सकेगा।
4. किसी भी व्यक्ति, घोड़े या गाड़ी पर इसका पैर नहीं पड़े, चलते समय इसे इस बात का ध्यान रखना होगा। जो व्यक्ति नहीं चाहता हो, उसे यह अपने हाथों से नहीं पकड़ेगा।
5. जब भी हमें जल्द कोई पत्र भेजना होगा, तब डाकिया तथा उसके घोड़े को यह अपनी जेब में डालकर ले जाएगा।
6. बल्फस्कयू राज के हमारे दुश्मनों से लड़ने में पर्वतीय मानव हमारी मदद करेगा। दुश्मनों के लड़ाकू विमानों को तोड़ने के लिए यह पूरी कोशिश करेगा।
7. यह हमारे मजूदरों को बगीचे के ईद-गिर्द दीवार बनाने में बड़े-बड़े पत्थर उठाकर देगा।
8. यह हमारे देश को मापने में हमारी सहायता करेगा। देश के बाहर चलेगा और अपने कदमों से इसे नापेगा।
9. अंतिम लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, हमारे 1724 लोगों का पर्याप्त भोजन इसे रोजाना मिलेगा।

कुछ शर्तें पसंद नहीं होते हुए भी मैं इस पूरी सूची को मानने के लिए तैयार हो गया। तभी सैनिकों ने मेरी जंजीरें खोल दीं और मैं आजाद हो गया। मैंने जमीन पर बैठकर उनके राजा के पैर छूए। उन्होंने मुझे यह शपथ लेने को कहा कि मैं एक अच्छा तथा लाभदायक सेवक बनूंगा।

कुछ दिनों बाद, मैंने न्यायालय के अपने एक दोस्त से पूछा कि किस प्रकार आकलन करते हुए उन्होंने मेरा भोजन तय किया है। मैं पूरी तरह से आश्चर्यचकित हुआ यह सुनकर कि प्रशासन के कुछ गणितज्ञों ने कोण मापने के यंत्र द्वारा मेरे शरीर को नापा व आकलन किया कि मेरे शरीर में उनके 1724 लोगों के शरीर आ सकते हैं।

राजधानी मिलांदो देखने के लिए मुझे इजाजत मिल गई थी, इसलिए मुक्त होते ही सबसे पहले मैंने यही कार्य किया। पहले से ही शहर में भ्रमण

तब मैंने अपने चाकू से कुछ बड़े पेड़ काटे। मैंने तीन फीट ऊंचे दो मेज बनाने के लिए इन पेड़ों की लकड़ियों का प्रयोग किया।

की घोषणा कर दी गई थी। लोगों को सख्ती से घरों में रहने का आदेश दिया गया ताकि किसी को कोई हानि न हो।

शहर को चारों तरफ से घेरने वाली बड़ी दीवार ढाई फीट ऊंची व 11 इंच चौड़ी थी। शहर का मुख्य द्वार केवल मेरे घुटनों जितना ही ऊंचा था और मैं बहुत बड़ा, इसलिए मैंने दीवार के ऊपर से पांव रखकर भीतर प्रवेश किया।

शहर की हर दीवार 6 फीट लंबी थी और शहर बिलकुल चौकोर आकार में बना हुआ था। शहर के बड़े राजमार्ग 5 फीट चौड़े थे। मैं सड़कों पर बहुत ध्यानपूर्वक चला। मुझे देखने के लिए सभी लोग अपने-अपने घरों की छतों पर चले गए।

मेरे कोट के किनारे से घरों को कोई नुकसान न हो, इसलिए मैं उसे पीछे ही रख आया था। मैं छोटी सड़कों तथा गलियों में प्रवेश नहीं कर पाया। मैंने देखा कि वह केवल 12 से 18 इंच चौड़ी थीं। मुझे बताया गया कि इस बड़े शहर की जनसंख्या 500 हजार है।

शहर के बीच में राजा का महल है, जो दो फीट ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है। मैंने इस दीवार को पार करने की इजाजत प्रशासन से ले ली थी। चारों तरफ की दीवारों से 20 फीट की दूरी पर महल की इमारतें थीं। मैंने किसी भी इमारत में प्रवेश नहीं किया। मैं राजमहल की सभी इमारतों को कम-से-कम बाहर से देखूं, यह राजा की इच्छा थी। मैंने समस्या का हल सोचा और वापस लौट आया।

रॉयल बाग शहर से कुछ ही दूरी पर था। जब मुझे कुछ देर बाद इजाजत मिली, तब मैंने अपने चाकू से कुछ बड़े पेड़ काटे। मैंने तीन फीट ऊंचे दो मेज बनाने के लिए इन पेड़ों की लकड़ियों का प्रयोग किया। मेरे वजन को उठाने में वे सक्षम थे। इन मेजों को बनाने के बाद मैं एक बार फिर राजमहल गया। वहां मैंने बाहरी तथा अंदर की इमारतों के बीच एक मेज को रखा। तभी मैंने उस मेज से दूसरी मेज पर पैर रखा और हुकदार डंडी से पहले मेज को उठा लिया। यह सब मैंने बहुत ध्यानपूर्वक किया। जहां राजा-रानी अपने बच्चों के साथ रहते हैं मैं उसे अंदर से देख सकूं, इसलिए सभी दरवाजे तथा खिड़कियां खुले रखे गए। मैंने सुंदर-सजे कमरे देखे। मुझे देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुईं। वह मेरी ओर दयालुता से देखकर मुस्कराईं, उन्होंने अपना हाथ मुझे चूमने के लिए दिया।

6

लिलीपुट के दुश्मन

दो हफ्तों बाद, निजी प्रशासन का मुख्यमंत्री मुझसे मिलने आया। उसका नाम रेलडैसल था। वह राजा का कोई गुप्त संदेश लेकर आया था। वह मुझसे लिलीपुट की आंतरिक व बाहरी समस्या की चर्चा करने आया था। उसने पूछा, "क्या मैं आपसे बात कर सकता हूं?"

मैंने कहा, "हां, मैं नीचे लेट जाता हूं, जिससे आप मेरे कान तक पहुंच जाएंगे।"

"नहीं, ऐसे ही ठीक है। मैं आपके हाथ पर बैठ जाऊंगा," वह बोला।

इसलिए मैं जमीन पर बैठ गया। उसने हाथ पर बैठकर मुझसे बात की।

रेलडैसल ने कहा, "मैं आपसे मदद के लिए पूछने आया हूं कि हमारे दुश्मनों से लड़ने में आप हमारी मदद करेंगे?"

मैंने पूछा, "आपके दुश्मन कौन हैं?"

रेलडैसल ने कहा, "टैमक्सैन व स्लैमस्केन नामक दो दल। पिछले 70 महीनों से ये हमारे शत्रु हैं। स्लैमस्केन से जुड़े लोग छोटी एड़ी के जूते व टैमक्सैन के लोग बड़ी एड़ी के जूते पहनते हैं। उनकी पहचान इसी तरह होती है। यह कभी साथ नहीं बैठते और न ही कभी साथ खाते-पीते हैं। ये आपस में कट्टर दुश्मन हैं। हमारे प्रशासन के लोग छोटी एड़ी के पक्ष में हैं। अपने राज्य में हमने उनको ऊंचे पद दिए हुए हैं। ऊंची एड़ी के लोग भले ही संख्या में ज्यादा हैं, किंतु ताकत छोटी एड़ी के हाथों में ही है। बाद में यह देखा गया कि उनकी एक एड़ी दूसरी एड़ी से बड़ी है, जिससे चलते समय वह लंगड़ाते हैं। प्रशासन को इस कारण बहुत चिंता होने लगी है।

"इसके साथ ब्रह्मांड के अकेले दूसरे राज्य ब्लफस्कयू द्वीप से खतरा है। लिलीपुट राज्य की तरह वह बड़ा व ताकतवर राज्य है। पिछले 36 महीनों से ये दोनों राज्य आपस में जंग लड़ने की तैयारी कर रहे हैं।

"इन दोनों के झगड़े की शुरुआत हमारे इतिहास का एक हिस्सा है। इसका आरंभ वर्तमान राजा के परदादा के समय आरंभ हुआ था और झगड़े का कारण था अंडों को तोड़ने का गलत तरीका," वह आगे बताने लगा।

"बहुत समय पहले की बात है, लिलीपुट में हर कोई उबले हुए अंडों को बड़े अंत से काटता तथा अंडों को खाने के लिए अपनी चम्मच के बड़े अंत में डालता। लेकिन एक दिन हमारे राजा के दादा की, जब वह एक छोटे लड़के थे, बड़े अंत से अंडे को खोलते हुए उंगली कट गई। तभी उनके पिताजी ने, जो उस समय राजा थे, एक नया कानून निकाला। तब से सभी लोगों को अपना अंडा छोटे अंत से ही तोड़ना पड़ता था। तब से हम सबको लिटल एंडर बनना पड़ा। इतिहास हमें बताता है कि इस कानून के विरोध में एक बड़ी संख्या में लोग खड़े हुए। तब से अब तक इस समस्या पर छह युद्ध हो चुके हैं। इस विद्रोह के कारण एक राजा ने अपना ताज तथा एक ने अपना जीवन भी गवां दिया। इस नए कानून को लेकर बहुत से लिलीपुटीन क्रोध में थे। उन्होंने घोषणा कि वह इस कानून को नहीं मानेंगे। वह अभी भी बड़े अंत से ही अंडे को काटते हैं। लिलीपुट के राजा 100 सालों से भी अधिक से हर बिग एंडर को पकड़ते और उन्हें सजा देते हैं। काफी लोग मारे गए और बहुत से लोग ब्लफस्कयू की तरफ भाग गए। अब, वहां बहुत से बिग एंडर जीवित हैं। हमारे विरुद्ध लड़ने में ब्लफस्कयू का राजा उनकी मदद कर रहा है। हमने 40 बड़े व कई छोटे जहाज गंवा दिए। 40000 से भी अधिक सैनिक मारे जा चुके हैं। अब उन्होंने हम पर आक्रमण करने के लिए अपनी नौसेना में बड़े-बड़े लड़ाकू जहाज शामिल कर लिए हैं। तुम्हारी ताकत व बहादुरी पर राजा का बहुत विश्वास है, इसलिए राजा ने मुझे तुम्हें यह सब बताने के लिए कहा है।" यह बताकर रेलडैसल मेरी प्रतिक्रिया जानना चाहता था।

मैंने रेलडैसल को कहा, "मैं एक विदेशी हूं। मेरा इस झगड़े से कोई लेना-देना नहीं है। मैं किसी एक तरफ या दूसरी तरफ की सहायता नहीं कर सकता।"

लेकिन तभी राजा का छठा कानून याद आया–'लिलीपुट के राज्य को उनके दुश्मनों के विरुद्ध लड़ने में मैं उनकी सहायता करूंगा।' मैंने उनके सचिव को यह विश्वास दिलाया। रेलडैसल जिस प्रकार खुफिया तरह से आए थे, उसी प्रकार मेरा आश्वासन पाकर वह चले गए। ब्लफस्कयू राज्य एक

महाद्वीप था, जो लिलीपुट से एक 800 गज चौड़ी नहर से अलग विभाजित होता था।

एक दिन मैंने राजा को बताया कि उनके दुश्मनों के हाथ से उनका जहाजी बेड़ा निकालने के लिए मेरे पास एक योजना है। मुझे कुछ अनुभवी मछुवारों से पता चला कि यह नहर कुछ स्थान पर छह फीट गहरी है, तो कुछ जगह साढ़े पांच फीट गहरी है। मैं किनारे के पास की एक चोटी पर चढ़ गया। मैंने किनारे के पास दुश्मनों के 50 जहाज और सैनिकों को लिए अन्य कई जहाज अपनी दूरबीन की मदद से देखे।

मैंने वापस लौटकर सबसे मजबूत तार तथा लोहे की छड़ी मंगवाई। एक साथ तीन तारों को मिलाकर मुझे एक मजबूत तार तैयार करनी पड़ी, क्योंकि तारें बहुत पतली थीं। इसी प्रकार मैंने मजबूती के लिए तीन लोहे की छड़ियों को एक साथ मरोड़ दिया। मैंने सभी छड़ियों के अंत में एक-एक हुक भी जोड़ दिया। इसी प्रकार तारें और हुक बनाकर मैं किनारे पर चला गया।

मैंने अपना कोट, जूते और जुराबें निकाल दीं। मैं वह सब सामान किनारे पर ही छोड़कर नहर में उतर गया। मैंने समुद्र के गहरे होने तक चलकर ही 30 गज पार कर लिया। मुझे फिर तैरना पड़ा। मैं आधे घंटे में दुश्मनों के जहाजी बेड़े तक पहुंच गया। ब्लफस्कयू के लोग मेरे बारे में नहीं जानते थे। जहाज पर बैठे लोगों ने जब मुझे देखा तो वह सब भयभीत हो गए। वह अपनी नाव से कूदे और तैरकर किनारे की ओर भाग खड़े हुए। मैंने हुक निकाले और जल्दी-जल्दी सभी नावों से बांध दिए। मैंने तारों का दूसरा सिरा अपने हाथ में पकड़ा और वापस चलने लगा। मुझ पर चलाए गए दुश्मनों के कुछ तीर मेरे मुंह पर आकर लगे। मैं डर गया कहीं मेरी आंखों को इन तीरों से कोई नुकसान न हो जाए। मैंने तभी अपना चश्मा निकाला और पहन लिया। इस तरह मैंने अपनी आंखें बचाईं।

जब उन्होंने मुझे अपनी नाव लिलीपुट की ओर ले जाते हुए देखा, तो वह दुखी होकर जोर-जोर से चिल्लाने लगे। मैं तैरकर वापस गया और रुक कर अपने हाथ- मुंह पर लगे तीर निकालने लगा। जब मुझे लगा कि अब मैं सुरक्षित हूं, तो मैं चलते हुए वापस लिलीपुट पहुंच गया। मेरा स्वागत करने के लिए किनारे पर राजा के साथ अन्य सदस्य भी मौजूद थे।

"लिलीपुट के तेजस्वी राजा की लंबी उम्र हो!" मैंने जोरदार स्वर में

ब्लफस्कयू से छह राजदूतों का प्रतिनिधिमंडल 500 से भी अधिक लोगों के साथ पहुंचा।

कहा। मेरे इस काम से राजा बहुत अधिक प्रसन्न हुआ। उसने लिलीपुट का सबसे ऊंचे सम्मान 'नैरडैक' की उपाधि मुझे दी।

मैं जब राजा के पास नाव लाया, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। किंतु राजा की इच्छा थी कि मैं वापस जाऊं और सभी जहाजों को लेकर आऊं। और यह भी कि ब्लफस्कयू में रहने वाले बिग-एंडियन प्रवासियों को या तो खत्म कर दूं या फिर उन्हें अंडों को छोटे अंत से काटने के लिए विवश करने में लिलीपुट की सहायता करूं। ब्लफस्कयू पर जीत हासिल कर, वह वहां वाइसराय की नियुक्ति कर राज करना चाहता था।

मैंने राजा और उसकी सरकार को कहा, "मैं ऐसा नहीं करूंगा।" मैंने यह भी कहा, "मैं उन्हें आपका गुलाम बनाने में सहायता नहीं करूंगा, वे आजाद लोग हैं। आजाद रहना उनका हक है।"

सभा में इस विषय पर चर्चा हुई। कुछ अच्छे लोगों ने मेरे विचारों का समर्थन भी किया। फिर मुझे अलग कर दिया गया। किंतु मेरे विचारों को राजा और उसके कुछ मंत्रियों ने नहीं माना। परिणामस्वरूप वे मुझसे नफरत करने लगे और गुप्त रूप से मेरे शत्रु बन गए।

तीन हफ्ते बाद, ब्लफस्कयू से छह राजदूतों का प्रतिनिधिमंडल 500 से भी अधिक लोगों के साथ पहुंचा। वे शांति का संदेश लेकर आए थे। दोनों देश एक लंबी बहस के बाद माने। सुलहनामे पर हस्ताक्षर किए गए। अब भी मैंने अपने नए पद नैरडैक का प्रयोग करते हुए ब्लफस्कूडियन को शर्मिंदगी से बचाया। सभी राजदूत मेरे बड़े दिल से बहुत खुश हुए। उन्हें यह भी पता चला कि मैंने लिलीपुट राज में उन्हें बंधक बनाने से किस प्रकार मना किया। फिर ब्लफस्कयू से लोग मुझे देखने आए। मेरी बहादुरी तथा उदारता की उन्होंने प्रशंसा की और मुझे अपने राजा से मिलने का न्यौता दिया।

मैंने उन्हें कहा, "मैं जल्दी आऊंगा।"

बाद में, मुझे राजा से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने उनसे ब्लफस्कयू जाने के लिए आज्ञा मांगी। मुझे स्वीकृति तो मिली, लेकिन बहुत निष्ठुरता से। मैं ऐसी निष्ठुरता का कारण समझ नहीं पाया।

❑❑

7

मैंने अपने दुश्मन बना लिए

बाद में मुझे पता चला कि मेरे दुश्मन एडमिरल बोल्गोलम और साम्राज्य के खजांची फ्लिम्नाप हैं। उन लोगों ने मेरी और राजदूत के बीच हुई बातचीत को गलत तरीके से प्रस्तुत किया था।

मैं पाठकों को उनकी इस नफरत का कारण बताना चाहता हूं। स्क्रेश बोल्गोलम इम्पीरियल नेवी का एक अफसर था। वो लिलीपुट राज्य का एक ताकतवर इंसान था, मगर मेरे आने के बाद उसकी इस ताकत और चमक पर काफी असर हुआ था। जब मैंने दुश्मनों के जहाजों पर कब्जा किया, तो उसने इसको अपनी बेइज्जती समझा। उसी दिन से वो मेरा दुश्मन बन गया था। उसने कोर्ट के सारे सदस्यों को भी मेरे खिलाफ कर लिया। उनमें से एक सदस्य है फ्लिम्नाप। इसने मेरे बारे में उसके भी कान भरे थे। उसने फ्लिम्नाप को बताया था कि उसकी पत्नी मुझसे प्यार करती है और एक दिन वह अकेले मुझसे मिलने आई थी।

यहां यह बात सही है कि वो महिला मुझसे अच्छा व्यवहार करती थी, वो अकसर मेरे घर भी आती थी, मगर सबके सामने, न कि अकेले। वो अपनी दोस्तों के साथ आती थी–उसके अलावा और भी महिलाएं मुझसे मिलने आया करती थीं।

इसी गलतफहमी की वजह से खजांची फ्लिम्नाप भी अपनी पत्नी से नाराज रहता था। बाद में इन लोगों में दोबारा रिश्ता बना, मगर मेरी नजरों में वो इंसान गिर गया था।

एक दिन राजा और उनकी राजकुमारी ने मुझे रात के खाने पर बुलाया। खजांची भी वहां मौजूद था। वो लोग मुझे खाना खाता देखकर बहुत हैरान थे। उस दिन मैंने भूख से कुछ ज्यादा ही खाना खा लिया। बस राजा को मेरे खिलाफ कान भरने का फ्लिम्नाप को मौका मिल गया। उसने कहा कि अगर

मैं लिलीपुट में कुछ और दिन रुक गया, तो सारा खजाना खत्म हो जाएगा। एडमिरल स्क्रेश, फ्लिम्नाप और कुछ अन्य मंत्री मेरे खिलाफ षड्यंत्र रच रहे थे। दो महीने से वो लोग मेरे पीछे पड़े थे और एक दिन उनको मौका मिल गया, जब मैं ब्लफस्कयू जाने की तैयारी कर रहा था। रात को मेरे घर में गुप्त तरीके से एक दोस्त घुसा। उसने मुझे दरवाजा बंद करने के लिए कहा और बताया, "तुम्हारे खिलाफ कोई षड्यंत्र रच जा रहा है। क्या तुम जानते हो कि स्क्रेश तुम्हारा तबसे दुश्मन है, जबसे तुम लिलीपुट में दाखिल हुए हो।"

"क्या तुम यह बता सकते हो कि इसका क्या कारण है?" मैंने हैरानी भरे स्वर में पूछा।

"मुझे नहीं पता कि इस नफरत का कारण क्या है, मगर जब से ब्लफस्कयू में तुम कामयाब हुए हो, तबसे नफरत और ज्यादा बढ़ गई है। उसने तुम्हारे खिलाफ कुछ लेख भी लिखे हैं। मैंने बड़ी चालाकी से तुम्हारे खिलाफ तैयार की गई सूची की एक कॉपी निकाल ली है। यह बहुत खतरनाक था, क्योंकि अगर उनको पता चला तो वो मेरी जान ले लेंगे। तुम्हारे खिलाफ तैयार सूची इस तरह है–

1. तुमको राजा ने दुश्मनों के सारे जहाजों को पकड़ने का काम दिया था, लेकिन तुमने वो सब नहीं किया, इसलिए तुम देशद्रोही हो।
2. जब ब्लफस्कयू के राजदूत यहां आए थे, तो तुमने उनका मनोरंजन किया और कहा कि तुम यहां खुश नहीं हो।
3. अब तुम ब्लफस्कयू जाने की तैयारी कर रहे हो, जिसके लिए तुमको सिर्फ मौखिक सूचना मिली है। तुम दुश्मनों की मदद करने जा रहे हो, एक देशद्रोही की तरह।

"तुम्हारे खिलाफ ये सभी आरोप लिखे हुए हैं, जो मैंने अभी पढ़कर सुनाए हैं।"

उसके बाद मेरा दोस्त बोला, "काफी बैठकों में इस बारे बातें हुई हैं और राजा ने हमेशा तुम्हारे काम की तारीफ की है, लेकिन एडमिरल और खजांची हमेशा तुम्हारी बुराई करते हैं।

"उनका इरादा है कि तुमको मौत की सजा हो। आज रात को तुम्हारे घर को आग लगा दी जाए और अगर तुमने भागने की कोशिश की तो बीस हजार आदमी तीर लेकर बाहर खड़े होंगे, जो तुम्हारे चेहरे पर तीरों से प्रहार करेंगे।

मेरे दोस्त ने कहा कि राजा भी तुम्हें मौत की सजा देने के खिलाफ हैं।

फिर राजा ने रेल्ड्रेसल से राय मांगी और उसने कहा कि तुम्हारे गुनाह गंभीर है, किंतु तुम्हारी जान बक्श देनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि तुम्हारी आंखें निकाल देनी चाहिए। तुम्हारा अंधापन राज्य के लिए खतरा नहीं होगा। बोल्गोलम और खजांची इस बात से नाराज हैं, वो रेल्ड्रेसल से तुम्हारी मदद करने को लेकर झगड़ रहे थे। उन दोनों का तो यह भी कहना है कि तुम राज्य के लिए एक बोझ हो गए हो और यह भी कि अंधे लोग ज्यादा खाना खाते हैं और मोटे हो जाते हैं।

मेरे दोस्त ने कहा, "राजा भी मौत की सजा के खिलाफ हैं, इसलिए उन्होंने अन्य सदस्यों से भी राय मांगी है। रेल्ड्रेसल का कहना है कि अंधे होने से तुम कम खाना खा पाओगे और कमजोर होते जाओगे, इसलिए अपने आप ही मर जाओगे और तुम्हारे शरीर के ढांचे को म्यूजियम में रख दिया जाएगा। आखिर राजा इस बात पर सहमत हो गया। तुम्हारी आंखों की गोलियां निकालने के लिए बीस सर्जन लगेंगे। तीन दिन के बाद राजा का दूत तुम्हारे पास यह सूचना लेकर आएगा और सारे आरोप पढ़कर सुनाएगा।"

सारी जानकारी देने के बाद मेरा दोस्त चला गया। मैं बहुत परेशान था। पहले सोचा कि 'उन सबसे माफी मांग लूं, मगर मैं तो ताकतवर था, अगर चाहता तो अकेले ही पत्थर फेंककर पूरे राज्य को खत्म कर सकता था।' लेकिन मेरा दिल मुझे ऐसा करने से रोक रहा था।

आखिर मैंने राजा को एक पत्र लिखकर भेज दिया कि मैं ब्लफस्कयू जा रहा हूं और तुरंत घर छोड़कर चला गया। मुझे पता था, अब मैं लिलीपुट वापस नहीं आऊंगा। इस तरह मेरी नौ महीने की लिलीपुट में रिहाइश खत्म हो गई।

❑❑

8

ब्लफस्कयू से भाग निकलना

मेरे स्वागत के लिए भारी संख्या में लोग ब्लफस्कयू के बंदरगाह पर इकट्ठा हुए थे। मुझे देखते ही वो चीखने और शोर मचाने लगे। वहां दो लोग थे, जिन्होंने मुझे शहर के बारे में बताया। मैंने उन दोनों का हाथ पकड़ा और चलने लगा। मैं शहर के गेट से थोड़ी दूर पहले ही रुक गया। मैंने उनमें से एक आदमी से कहा कि वहां के राजा को वह मेरे बारे में इत्तिला दे। मैं बाहर उनका इंतजार कर रहा हूं। थोड़ी देर के बाद राजा अपने सैनिकों के साथ मेरे स्वागत के लिए आ गए। मैं जमीन पर बैठ गया ताकि राजा और रानी का हाथ चूम सकूं।

मैं खुश था कि उन लोगों ने मेरा स्वागत किया। मुझे घर की दिक्कत थी, इसलिए कुछ दिनों तक मुझे जमीन पर ही सोना पड़ा। तीसरे दिन मैं समुद्र के किनारे टहलने निकला। अचानक मैंने एक नौका देखी जो उलटी पड़ी थी। बिना समय बरबाद किए हुए मैंने अपने जूते और मौजे उतारे। दो-तीन मील तक समुद्र मैं उतरा। समुद्र की एक तेज लहर ने उस नौका को मेरे पास भेज दिया और मैंने देखा कि वो नौका किसी जहाज से गिरी थी। मैं तुरंत शहर में गया और राजा से कहा कि मुझे बीस बड़े जहाज और कुछ मल्लाह दे दें। राजा ने मेरी पूरी मदद की। सारे मल्लाह समुद्र के किनारे पहुंच गए। किसी तरह हम उस नौका को किनारे तक ले आए। मैंने देखा वो नौका थोड़ी टूटी हुई थी और मरम्मत मांग रही थी। यहां के लोगों ने इतनी बड़ी नौका इससे पहले नहीं देखी थी। थोड़ी देर में बहुत सारे लोग वहां आ गए। मैंने राजा से उस नौका की मरम्मत के लिए सामान मांगा और उसको ठीक करने के बाद अपने देश वापस जाने की बात भी कही।

अब तक लिलीपुट के लोग भी समझ चुके होंगे कि मैं देश छोड़कर जा चुका हूं। मैं अपने उस दोस्त के बारे भी सोच रहा था, जिसने मेरी वहां

मदद की थी। कुछ दिन के बाद लिलीपुट का राजदूत ब्लफस्कयू आया। उसने यहां के राजा को मेरे खिलाफ तैयार की गई चार्जशीट दिखाई। उसने मुझे देशद्रोही भी बताया। उसने राजा से कहा कि दो घंटे के अंदर मुझे वापस लिलीपुट भेज दे, वरना 'नैरडेक' का खिताब भी मुझसे वापस ले लिया जाएगा। उसने ब्लफस्कयू से दोस्ती का हाथ भी आगे बढ़ाया और कहा कि लिलीपुट के दुश्मन यानी कि मुझे तुरंत वापस जंजीरों में जकड़ कर वापस भेज दिया जाए।

अपने सदस्यों से राय लेने के बाद ब्लफस्कयू के राजा ने जवाब भेज दिया-जो इस तरह था, 'आप अच्छी तरह से जानते हैं कि इस आदमी को जंजीरों में जकड़ कर लाना मुश्किल है। हालांकि इसने हमारा जहाज भी पकड़ा है, मगर दोनों देशों के रिश्तों को ठीक करने में मदद भी की है। इसने एक विचित्र-सी नौका भी ढूंढ़ी है, जो इसको दूसरे देश लेकर जाएगी। हमको तो खुश होना चाहिए कि ये दोनों राज्यों को छोड़कर कहीं तीसरी जगह जा रहा है।'

राजा ने मुझे इस सबके बारे में बाद में बताया था।

इस तरह राजा ने न सिर्फ मेरी मदद की, बल्कि मुझे उसी देश में रहने की तथा सारी सुविधा देने की भी बात कही। मैंने उनको कहा, "शायद भगवान की मर्जी है कि मैं इस जगह को छोड़कर चला जाऊं। मैं दो देशों के बीच हुई दोस्ती को बिगाड़ना नहीं चाहता था।"

मैं ब्लफस्कयू से जाने के लिए तैयार था। करीब एक महीने में वो नौका ठीक हुई। राजा और उनके मंत्री मुझे विदा करने के लिए वहां आ गए। राजा ने मुझे कुछ सोने के सिक्के दिए, जिन पर उनकी फोटो छपी हुई थी। मैंने वो तुरंत जेब में रख लिए।

राजा बहुत दयावान था। उसने बावर्चियों को मेरा खाना तैयार करने को कहा। मैंने बहुत सारा खाना, ब्रेड, मक्खन और दूध अपने साथ रख लिया। साथ ही मैंने गाय और दो सांड भी अपने साथ नौका में रख लिए और उनका खाना भी। मैं वहां के कुछ लोगों को भी ले जाना चाहता था। मगर राजा ने ऐसा करने से इनकार कर दिया।

आखिर सितंबर को सुबह-सुबह मैं निकल गया। मौसम बहुत अच्छा था और मैं जल्दी ही जहाज तक पहुंच गया। मैं खुश हुआ, जब मैंने उस
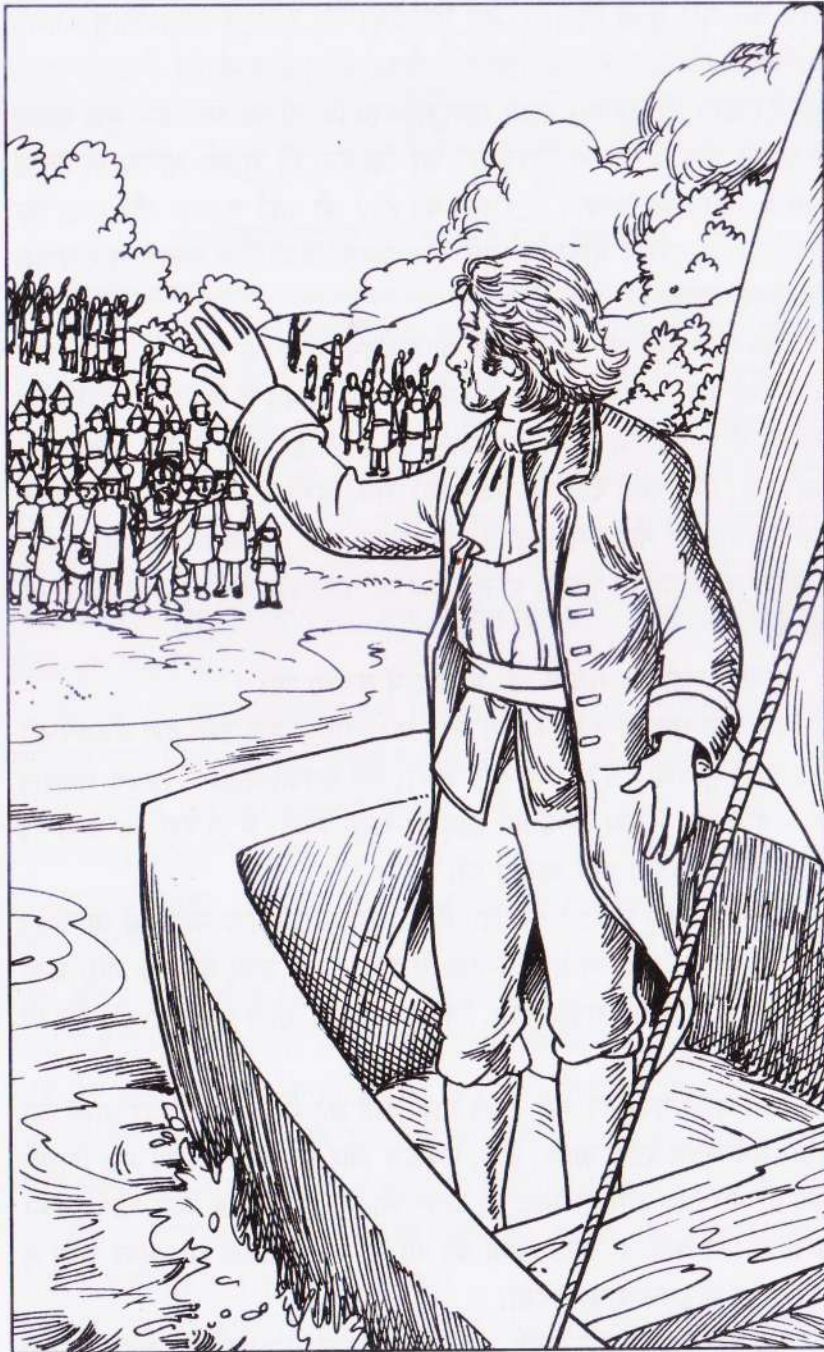
24 सितंबर, 1701 सुबह 6 बजे मैं जहाज पर बैठा।

जहाज पर ब्रिटिश झंडा देखा। जहाज के लोगों ने भी मुझे देख लिया और एक नौका नीचे भेज दी। कोई इंग्लिश व्यापारी जापान से लौट रहा था। जहाज का कप्तान बिद्‌देल एक अच्छा आदमी था। 24 सितंबर, 1701 सुबह 6 बजे मैं जहाज पर बैठा। 13 अप्रैल, 1702 को इंग्लैंड में पहुंच गया।

यात्रा बहुत अच्छी थी, बस एक भेड़ को चूहे ने जहाज पर खा लिया था, बाकी सब जानवर ठीक थे।

इंग्लैंड में मैं कुछ समय तक रुककर फिर जानवर बेचकर दूसरी यात्रा पर चला गया। मैं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ दो महीने रहा। मैंने एक घर खरीद लिया और वहीं अपने परिवार के साथ रहने लगा। इसके अलावा मेरे अंकल मेरे लिए जो जमीन छोड़कर गए थे, उससे मुझे हर साल कुछ पौंड मिल जाते थे।

❑❑

द्वितीय भाग

1

मुझे अकेला छोड़ दो

मैंने अपनी जोखिम भरी यात्रा में काफी परेशानियां झेली थीं, मगर फिर भी मैं समुद्र के पास जाने से नहीं डरा। एक बार फिर मैं 20 जून, 1702 में अपने जहाज में देश से बाहर गया, जिसका नाम एडवेंचर था और जो सूरत रवाना हो रहा था। मेरी यात्रा बहुत अच्छी हुई, मौसम बड़ा सुहाना था। केपगुड होप तक हमारा सफर सुहाना था, हम वहां ताजा पानी पीने के लिए रुके। हमारे एक सदस्य ने देखा कि जहाज में पानी लीक कर रहा था। जहाज को ठीक करने में थोड़ा वक्त लगा। इसी दौरान जहाज का कप्तान बीमार पड़ गया, इसलिए हमको पूरी सर्दी वहीं रहना पड़ा। मार्च महीने के अंत में हम वहां से चल पड़े।

हमने अपनी यात्रा शुरू की और जल्द ही स्ट्रेस मेडागास्कर पहुंच गए। वहां दिसंबर से लेकर मई तक समुद्र का मिजाज बड़ा भयानक रहता है। उस समय समुद्र का मूड बहुत ही ज्यादा खराब था। करीब बीस दिन तक आंधी-तूफान चलता रहा। ये हम लोगों के लिए बड़ा मुश्किल समय था। जब मई में आंधी रुकी, तब हमको शांति मिली। कप्तान ने हमको समझाया कि अभी आंधी पूरी तरह नहीं रुकी है। दोबारा आने का अंदेशा है और उसकी बात सच निकली। अगले दिन एक हवा का झोंका आया, वह एक खतरनाक तूफान था। समुद्र का मिजाज बहुत खौफनाक हो गया था। किंतु हमारे जहाज ने उस तूफान का जमकर सामना किया और हम बच गए। हम कहां पहुंच चुके थे, यह कोई जानकार मल्लाह भी नहीं बता सकता था।

खुशकिस्मती से हमको खूब खाने की चीजें मिल गईं और जहाज के सारे लोग खुद को तंदरुस्त महसूस करने लगे। अचानक ही आंधी रुक गई।

वो बहुत खतरनाक तूफान था, समुद्र बहुत खतरनाक लग रहा था उस समय।

वह एक खतरनाक तूफान था, समुद्र का मिजाज बहुत खौफनाक हो गया था।

हमने आगे बढ़ना शुरू किया। 16 जून, 1703 को एक लड़के ने ऊपर से जमीन देखी। हमने जमीनी जगह देखी, लेकिन ये समझ में नहीं आ रहा था कि यह द्वीप है या कोई टापू।

कप्तान ने जहाज वहां पर रोक दिया और हम पानी की तलाश में निकल पड़े, एक लंबी-सी नौका लेकर। कप्तान से इजाजत लेकर मैं दूसरे देशों को देखने निकल पड़ा। हैरानी की बात थी कि मैं एक ऐसी जगह पहुंच गया, जहां न तो नदी थी, न ही किसी इंसान के होने की उम्मीद थी। मेरे साथी दूसरी जगह पानी खोज रहे थे। मैं अकेला था और वो जगह सुनसान थी। मैं नौका की तरफ बढ़ा और देखा कि सारे लोग नौका में पहले पहुंच चुके हैं और जहाज की तरफ जा रहे हैं। जैसे ही मैं चिल्लाने वाला था, वहां मैंने एक बहुत विचित्र-सा जीव समुद्र में उनकी नौका के पीछे जाता देखा। नौका उससे एक मील दूर थी। मैं तेज-तेज दौड़ता हुआ पहाड़ पर चढ़ गया। मैंने देखा तक नहीं कि क्या हो रहा है। जैसे ही में उस पहाड़ी की चोटी पर पहुंचा, मैंने दूसरी तरफ हरी-भरी धरती देखी। वहां बहुत घास थी—कम-से-कम छह फीट ऊंची-ऊंची घास थी वहां।

मैं चलकर पहाड़ी की दूसरी तरफ गया। मैं आगे बढ़ने लगा और सड़क पर पहुंच गया। मुझे लगा वो कोई हाइवे होगा, लेकिन वो वहां के लोगों के लिए बनी एक सड़क थी। इस सड़क के दोनों तरफ भुट्टे के खेत थे।

❑❑

2

अस्तोनिशिंग पीपल

करीब एक घंटे चलने के बाद मैं एक मैदान के किनारे पर पहुंच गया। वहां करीब 6 फीट लंबी झाड़ियां थीं। थोड़ी देर बाद मैं एक पेड़ के पास पहुंचा, जो एक तरह का दरवाजा था—एक मैदान से दूसरे मैदान में घुसने का। वहां चार सीढ़ियां थीं, करीब 20 फीट लंबी। मैं उन सीढ़ियों को देखकर हैरान हो गया। अचानक मैंने एक विशाल जीव देखा, वो समुद्र वाले जीव से मिलता-जुलता था। उसे देखकर मैं हैरान-परेशान था। वो बहुत लंबा-चौड़ा, करीब 72 फीट का होगा। मैं उसको देखकर मैदान में ही छिप गया। मैंने उसे किसी को बुलाते हुए भी सुना। एक आदमी वहां आया। उसकी आवाज बहुत कड़क थी। थोड़ी देर बाद मैंने उसी तरह के सात लोगों को वहां आते देखा। लिलीपुट में तो मैं विशाल दिखता था, किंतु यहां तो मैं एक लिलीपुट लग रहा था। वो सारे लोग अपने हाथों में हंसिया लिए हुए थे। उनके कपड़ों से लग रहा था कि वो मजदूर हैं। उनमें से एक किसान था।

उस किसान ने उन लोगों को कुछ निर्देश दिए। उसके बाद वो खेत में आए, जहां मैं छिपा हुआ था। वो भुट्टों का खेत था और शायद वो फसल काटने आए थे। मैं बिना देरी किए वहां से भागा। लेकिन भाग पाना मुश्किल था क्योंकि भुट्टों के पौधों के बीच काफी अंतर था। मैंने खुद को सिकोड़ लिया था और वहां से जल्दी निकल रहा था। जल्दी ही मैं खेत के उस हिस्से में पहुंच गया था, जो बारिश और आंधी की वजह से बरबाद हो चुका था। बस मैं वहीं लेट गया।

मैं अपने आपको बहुत परेशान और लाचार महसूस कर रहा था। मुझे अपने बीवी और बच्चों की भी याद आ रही थी। उनमें से एक जीव तो वहीं चलकर आ गया, जहां मैं छिपा हुआ था। वो कहीं मेरे ऊपर खड़ा न हो जाए या मुझे ही भुट्टों के साथ न काट दे, यह सोचकर मैं चिल्लाया। वो जीव

मैंने एक बड़ा विशाल-सा जीव देखा, बिलकुल उस जीव से मिलता-जुलता जिसे मैंने समुद्र में देखा था।

वहीं रुक गया। उसने इधर-उधर देखा, फिर मुझे अपने हाथ में उठाया और देखने लगा।

मैंने खुद को उसके हाथों से छुड़ाना सही नहीं समझा, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता तो न जाने कितने फीट नीचे गिर जाता। मैंने हिम्मत करके कुछ बोलना चाहा। उसने मुझे अपनी उंगलियों में जकड़ा हुआ था। मैं उसको यह बताना चाहता था कि मुझे दर्द हो रहा है। शायद वो भी यह समझ गया था, इसलिए उसने मुझे अपने कोट की जेब में रखा और अपने मालिक के पास ले गया।

थोड़ी देर में हम उसके मास्टर के पास पहुंच गए। उसका मालिक भी मुझे देखकर हैरान था।

फिर उसने अपने आदमियों से पूछा, "क्या किसी ने इस तरह का जीव खेत में और कहीं देखा है?" सबने मना कर दिया। फिर उसने मुझे अपनी हथेली पर रखा और मैंने उसको वहां से उतरकर जमीन पर चलकर दिखाया, यह बताने के लिए कि मैं भी एक इंसान हूं।

वो सब मुझे घेरकर खड़े हो गए। मैं उनके आगे हाथ जोड़ने लगा, अपनी जिंदगी की गुहार करने लगा। वो किसान मुझसे बोल रहा था, लेकिन मुझे उसका बोला कुछ समझ नहीं आया। मैंने भी उससे तरह-तरह की भाषाओं में बात करनी चाही, मगर हम दोनों एक-दूसरे को समझ नहीं सके।

❑❑

3

डी फार्मर हाउस

अब किसान ने अपनी जेब में से रूमाल निकाला और उसकी तह बनाई। उसके बाद उसने उस रूमाल को अपनी हथेली पर रखा और फिर अपना हाथ जमीन पर रख दिया। मैं समझ गया वो मुझे इस रूमाल पर खड़ा करना चाहता था। इसके बाद वो मुझे अपने घर ले गया। वहां उसने अपनी बीवी और बच्चों को बुलाया। वो लोग मुझे देखकर ऐसे चिल्लाने लगे, जैसे कि उन्होंने कोई कॉकरोच देख लिया हो। उसकी बीवी तो जैसे बेहोश ही हो गई थी।

किसान के तीन बच्चे, बीवी और बूढ़ी मां थी। पूरा घर खाने की टेबल पर बैठा था। किसान ने मुझे थोड़ी दूरी पर करीब जमीन से तीस फीट की ऊंचाई पर बैठाया। उसकी पत्नी ने मुझे मांस और रोटी खाने को दी। सारे लोग मुझे खाता हुआ देख रहे थे।

उसके बाद उन्होंने मेरे लिए नौकर से दूध मंगवाया। उनका छोटा कप भी मेरे लिए एक ड्रम के बराबर था। किसी तरह मैंने पूरा दूध पिया। खाना खाने के बाद उसने मुझे इशारे से अपने पास बुलाया। जैसे ही मैं उनके पास गया, तो बीच में पड़े ब्रेड से टकरा कर गिर पड़ा। सब लोग मेरी तरफ हैरानी से देखने लगे।

मैं तुरंत उठकर खड़ा हो गया, अपनी टोपी हवा में लहराई ताकि वो समझ सकें कि मैं ठीक हूं।

उसके बाद उनके छोटे बेटे ने मुझे उठा लिया और हवा में उछालने लगा, मगर उसके पिता ने न सिर्फ उसको डांटा, बल्कि वहां से जाने के लिए भी कहा। मुझे डर था कि कहीं वो लड़का मुझे आगे भी तंग न करे, इसलिए मैंने किसान से कहा कि वह उसे माफ कर दे। वह समझ गया और उसने अपने बेटे को वापस बुलाया। मैंने उसका हाथ पकड़ा और प्यार किया।

तभी एक बिल्ली आकर किसान की पत्नी की गोद में बैठ गई। मैं हैरान

था, क्योंकि वो किसी बैल से तो तीन गुना लंबी थी। हालांकि मैं टेबल की दूसरी ओर था, लेकिन फिर भी उसको देखकर डर रहा था। उसकी आवाज भी मेरे लिए बिजली के कड़कने की आवाज से कम नहीं थी। किसान की पत्नी ने उसको पकड़ रखा था, ताकि वो मुझे नुकसान न पहुंचा सके। फिर किसान ने मुझे उठाकर टेबल पर उसके पास खड़ा कर दिया। थोड़ी देर बाद वो अपने कान नीचे करके किसान की पत्नी के पास चली गई। मैं खुश था, वो अब मुझसे डर रही थी।

थोड़ी देर बाद उनकी नौकरानी उनके छोटे बच्चे को ले आई। मुझे देखते ही वो बच्चा जोर से चिल्लाया। उसकी आवाज मीलों तक गई होगी। उसको लगा कि उसके पिता उसके लिए कोई नया खिलौना लाए हैं और वो मुझे उनसे मांगने लगा। किसान की पत्नी ने मुझे उठाया और बच्चे को दिखाने लगी। उस बच्चे ने मुझे अपनी मोटी उंगलियों के बीच फंसा लिया।

वह मेरा सिर अपने मुंह में लेने वाला था कि तभी मैं जोर से चिल्लाया। वो बच्चा मुझे जमीन पर फेंक कर चला गया, तुरंत उसकी मां ने आकर मुझे उठाया। उसके बाद किसान ने खेत की ओर जाते हुए अपनी बीवी से मेरा ख्याल रखने का कहा। मैं थक गया था। मुझे नींद आ रही थी। इसीलिए उसकी पत्नी ने मुझे आरामदायक बिस्तर पर लिटा दिया। उन्होंने मेरे ऊपर एक रुमाल भी ओढ़ा दिया।

मैं करीब दो घंटे तक सोया। अपनी पत्नी और बच्चों के बारे में सपने देखता रहा, लेकिन जब आंखें खुलीं, तो मैंने वहीं एक बड़े से कमरे में अपने आपको पाया। वो कमरा कम-से-कम 30 फीट चौड़ा और 24 फीट लंबा था। उसकी पत्नी मुझे बाहर से बंद कर गई थी।

तभी मैंने दो चूहे देखे, जो किसी तरह मेरे कमरे में घुस आए थे। मैं डर के मारे इधर-उधर भागता रहा। वो दोनों मुझ पर हमला कर रहे थे। मैं उनमें से एक को चोट पहुंचाने में कामयाब रहा। वे दोनों किसी शिकारी कुत्ते से कम नहीं थे। अगर मेरे पास तलवार नहीं होती, तो पता नहीं क्या होता।

आवाज सुनकर किसान की पत्नी आ गई, उसने बिस्तर पर खून देखा। वह समझ गई कि कुछ हुआ है। मरे हुए चूहों को देखकर उसे अंदाजा हो गया कि वहां क्या हुआ होगा। वह मेरे पास आई। मुझे सुरक्षित देखकर वो खुश थी।

उस किसान की एक नौ साल की लड़की भी थी। उसने अपनी मां के साथ मिलकर अपनी गुड़िया का बिस्तर मुझे दिया। रात को उन्होंने मुझे दराज में रख दिया ताकि कोई मुझको नुकसान न पहुंचा सके। उस छोटी बच्ची ने मुझे कपड़े दिए और मुझको कुछ शब्द भी सिखाए। वह मेरी टीचर बन गई थी। वह मेरा ध्यान भी रखती थी, मैं उसको ग्लुम्दाल्क्लित्च अर्थात् छोटी नर्स बुलाता था। वो मुझको ग्रिल्ड्रिग अर्थात् 'छोटा आदमी' इस नाम से पुकारती थी। उसी ने मुझे बताया की उस देश का नाम ब्राबडिंगनेग है।

❑❑

4

मुझे दिखलाना

जैसे-जैसे दिन गुजरते गए, वहां के लोगों को पता चल गया कि किसान को खेत में एक अजीब-सा प्राणी मिला है, जो देखने में इंसान लगता है। वह अजीब-सी भाषा बोलता है और कहना मानता है। उसके दो पैर तथा दो हाथ हैं और गोरा रंग है। लोग मेरे मालिक के घर मुझे देखने के लिए आने लगे। एक दिन एक बूढ़ा आदमी मुझे देखने आया। उसकी आंखें कमजोर थीं। मुझे देखने के लिए उसको अपना चश्मा लगाना पड़ा, जो मोटे शीशे का था। उस चश्मे में उसकी आंखें मुझे बड़ी-बड़ी लग रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो खिड़की में से चांद चमक रहा हो। मुझे हंसी आने लगी। यह देखकर वो बूढ़ा आदमी मुझसे नाराज हो गया।

मैं तुरंत टेबल पर बैठ गया। मेरे मालिक ने मुझसे कुछ करने को कहा, जैसे-मैं सभ्य तरीके से चलने लगा। फिर मैंने अपनी तलवार निकाली, हवा में हिलाई और अंदर रख दी। मैंने मेहमान को नमस्कार किया और उनकी भाषा में उनका स्वागत भी किया।

मेरे मालिक का दोस्त बड़ा लालची था। उसने मालिक से कहा, "तुम इसको बाजार में क्यों नहीं ले जाते हो? इसे लोगों को दिखाकर तुम अच्छा-खासा पैसा कमा सकते हो।"

अगले दिन सुबह गिलुदालकिल्च मेरे पास आई, वो उदास थी। मेरे पूछने पर वो लड़की बोली, "मेरी मां ने तुम्हें मुझे दिया था और अब वो तुमको ले जा रही हैं। पहले भी एक बार उन्होंने मुझको एक भेड़ का बच्चा दिया था, फिर उसको मुझसे छीनकर एक कसाई को बेच दिया।"

वो बहुत उदास थी, क्योंकि मैं उसका एक खिलौना था। उसको डर था कि मुझे कुछ नुकसान न पहुंचे और बाजार में जो मेरा तमाशा दिखाया जाएगा, उससे मेरे आत्मविश्वास को ठेस न पहुंचे। लेकिन वो अपने पिता को समझा

न सकी। मैं इतना परेशान नहीं था, क्योंकि मैं सोच रहा था, किसी तरह वहां से भागकर वापस इंग्लैंड निकला जाए।

अगले दिन मेरे मालिक ने मुझे एक डिब्बे में रखा और दूसरे शहर जाने लगे। मेरी छोटी नर्स भी साथ में थी और उसने अपनी गुड़िया का कंबल बिछा दिया था, ताकि मैं आराम से उस पर लेट जाऊं। पूरी यात्रा हिलते-डुलते करनी पड़ी, क्योंकि उनका घोड़ा कम-से-कम चालीस फीट ऊंचा कदम उठाकर चलता था। उसका हर कदम मेरे लिए एक तूफान की तरह होता था। हम आधे घंटे में शहर पहुंच गए। मेरे मालिक एक सराय पर रुके और वहां उन्होंने एक लाऊड स्पीकर मांगा और जोर से आवाज लगाकर लोगों को बुलाया, यह दिखाने के लिए कि उनके पास एक विचित्र आदमी है। उन्होंने कहा, "यह आदमी बहुत छोटे कद का है और अजूबे करता है।"

उसके बाद मुझे उस सराय की बड़ी-सी टेबल के ऊपर खड़ा कर दिया गया। वो कम-से-कम 300 स्क्वायर फीट थी। वो छोटी नर्स मेरी टेबल के पास खड़ी हो गई, मेरा ध्यान रखने के लिए। थोड़ी देर में लोगों की भीड़ जुट गई, मुझे देखने के लिए। मेरे मालिक ने सिर्फ तीस लोगों को एक बार में अंदर आने दिया। मुझे उनके सामने वो सब करना पड़ा, जो मैं तीन-चार दिन से कर रहा था। उस दिन तो करीब बारह बार ऐसा तमाशा दिखाना पड़ा। मैं बहुत थक गया था। तीन दिन तक पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ा भी न हो सका। मेरा मालिक लालची हो गया था। घर पर भी लोग आने लगे थे, उसने दाम भी बहुत बड़ा दिए थे। मुझको बिलकुल भी आराम नहीं मिलता था। सिर्फ बुधवार को छुट्टी रहती थी। मेरे मालिक ने मुझे देश के बड़े-बड़े शहरों में ले जाने का फैसला किया।

मुझे करीब दो महीने तक ब्राबडिंगनेग में हो चुके थे। 17 अगस्त, 1703 को मैं यहां आया था। मेरे मालिक ने मुझे राजधानी ले जाने का फैसला किया। मेरी छोटी नर्स भी हमारे साथ ही थी। उसने अपनी गुड़िया का बिस्तर बिछा दिया था। देश की राजधानी वहां से करीब 3000 मील दूर थी। रास्ते में पड़ने वाले सारे शहरों में मेरा मालिक मेरा तमाशा दिखाता हुआ गया। हम छोटी-छोटी यात्राएं कर रहे थे। हम लोग एक दिन में करीब 160 मील तक का सफर तय करते थे। मेरी छोटी नर्स मेरी मुश्किलें समझती थी। वो मुझे डिब्बे में से बाहर निकालती थी, ताजी हवा लेने के लिए। रास्ते में पड़ने वाली

नदियां भी वह मुझे दिखाया करती थी। हमारी यात्रा करीब दस दिन में पूरी हुई और मैं 18 बड़े शहरों में गया।

26 अक्टूबर को हम देश की राजधानी लोरब्रूलग्रुड 'प्राइड ऑफ यूनिवर्स' पहुंचे और वहां मेरे पोस्टर लगा दिए गए। बहुत जल्दी, मैं शहर में चर्चित हो गया। लोग मुझे देखकर हैरान और खुश थे। मेरा मालिक तो लालची हो ही चुका था। पूरे दिन मुझको तमाशा दिखाना पड़ता था, जिसकी वजह से मेरी तबीयत खराब रहने लगी, मगर इस बात की उसे कोई परवाह नहीं थी।

मैं दिन-पर-दिन कमजोर हो रहा था। मेरा मालिक यह महसूस कर रहा था, मगर फिर भी उसे मुझ पर तरस नहीं आ रहा था। मरने से पहले वह मेरा पूरा फायदा उठा लेना चाहता था।

❑❑

5

रानी का पसंदीदा

एक दिन एक आदमी संदेशा लेकर मेरे मालिक के पास आया। उसने कहा कि मुझको राजमहल में रानियों और दूसरी महिलाओं के मनोरंजन के लिए लाया जाए। रानी ने मेरे बारे में किसी से सुन लिया था। अगले दिन मालिक मुझे रानी के दरबार में ले गया।

रानी और उनकी दासियां मुझे देखकर खुश थीं। मैं जमीन पर बैठ गया, रानी ने अपनी उंगली निकाली और मैंने उसको चूम लिया। उसने मुझसे मेरे बारे में काफी सवाल भी पूछे। मैंने सारे जबाव दिए, जिन्हें सुनकर रानी मुझसे खुश थी।

मैंने कहा, "मैं अपने मालिक का एक नौकर हूं, वरना मैं सारी जिंदगी आपकी खिदमत करता। अगर मालिक इजाजत दें, तो मैं सारी जिंदगी के लिए दरबार में रुक जाऊं।"

रानी ने तुरंत मालिक के सामने मुझे खरीदने का प्रस्ताव रखा। मालिक को लगता था कि अब यह ज्यादा दिन तक जिंदा नहीं रह सकता है। लिहाजा उसने मेरे बदले में सोने के सिक्के लेने बेहतर समझे। रानी ने तुरंत मुझको खरीद लिया। मैंने रानी से अपनी छोटी नर्स को भी वहां रोकने का निवेदन किया। रानी राजी हो गईं। मेरा मालिक भी खुश था कि उसकी बेटी राजमहल में रहेगी। उसके बाद किसान वहां से चला गया। मुझे उसका जाना अच्छा लगा। रानी हैरान थी कि मैंने मालिक को ठीक से विदा क्यों नहीं किया था। रानी ने कारण पूछा, "तुमने अपने मालिक से ठीक से बात क्यों नहीं की?"

"वो मुझसे बहुत काम करवाता था, जिसकी वजह से मैं बीमार पड़ गया हूं। उसको लगता है कि मैं ज्यादा नहीं जी पाऊंगा, इसलिए वो मुझे बेच गया है। परंतु आप बहुत दयालु हैं, मैं आपका नौकर बनकर गर्व महसूस करूंगा और जल्दी ठीक हो जाऊंगा," मैंने जवाब दिया।

रानी यह सुनकर खुश हो गई और मुझे उठाकर राजा के पास ले गई। मैं इतना छोटा था कि राजा ने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। जब रानी के कहने पर मैं कुछ बोला, तो उनको यकीन हुआ। रानी ने मुझे राजा के सामने टेबल पर खड़ा कर दिया और अपने बारे में सारी बात बताने को कहा।

मैंने राजा को सब कुछ बता दिया। वह मुझे देखकर हैरान थे, लेकिन उनको यकीन नहीं पा हो रहा था कि मैं उनके राज्य तक कैसे पहुंचा। उन्होंने सोचा कि किसान और उसकी लड़की की मनगढ़ंत कहानी है यह। लेकिन ग्लूमडालक्लिच ने भी मेरे बारे में सारी बातें राजा को बताईं।

राजा को भरोसा नहीं था, इसलिए उसने अपने दरबार के तीन लोगों को बुलाकर मेरे बारे में राय मांगी। सबने अपनी-अपनी राय दी।

"यह एक असाधारण व्यक्ति है, यह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता, गड्ढा नहीं खोद सकता, अपना ध्यान नहीं रख सकता। एक चूहा भी इससे बड़ा होगा। यह प्रकृति की एक भूल है," एक ने कहा।

मैंने तुरंत कहा, "मैं बिल्कुल ठीक हूं, मेरे देश में सब मेरी तरह ही हैं। हमारे पेड़ और जानवर भी आपकी तुलना में छोटे हैं!"

लोगों को मेरी किसी बात पर भरोसा नहीं हो रहा था, लेकिन राजा को अब होने लगा। उसने अपने नौकरों को भेजकर किसान को लाने को कहा।

खुशकिस्मती से किसान अभी उन्हीं के राज्य में था। उसको देखकर राजा समझ गया कि मैं सच बोल रहा हूं। उसने मेरी सुरक्षा का पूरा इंतजाम किया और ग्लूमडालक्लिच को मेरी देखरेख का जिम्मा दिया। उसको एक अच्छा-सा घर दिया गया। रानी ने बढ़ई से कहकर मेरे लिए आरामदायक बिस्तर तैयार करवाया। करीब तीन हफ्ते में मेरा मुलायम-सा बिस्तर तैयार हो गया। वो 16 फीट लंबा, 12 फीट ऊंचा था। उसमें दो अलमारियां, खिड़की, दरवाजे आदि थे। इस तरह मेरा कमरा तैयार हो गया। मेरे लिए सिल्क के कपड़े भी आ गए। थोड़े दिनों में रानी को मैं बहुत पसंद आने लगा। वह मेरे ही साथ खाना खाती थी। वह अपनी प्लेट से खाना लेकर उसके छोटे टुकड़े करके मुझको खिलाती थी। वहां के चाकू, चम्मच और बर्तन भी बहुत बड़े थे।

राजा भी मेरा अच्छा दोस्त बन बन गया। मैं उनका भी पसंदीदा था। हम अकसर बुधवार के दिन एक साथ खाना खाते और मैं उनको अपने देश के बारे में जानकारी देता। राजा ने हैरान होकर अपने प्रधानमंत्री से कहा, "यह देखो, यह कीड़े-मकौड़े जैसे लोग इंसानों जैसे दिखते हैं।"

6

अद्भुत-जोखिम

मैं इस देश के बारे में संक्षेप में कुछ बताना चाहता हूं। इस देश की लंबाई करीब 6000 मील और चौड़ाई 3-5 हजार थी, लेकिन मैं पूरे देश में घूम न सका। मैं सिर्फ 2000 मील लार्डब्रूलग्रड देश की राजधानी में घूमा था। वहां पर बहुत सारे पहाड़ भी थे। मुझे हैरानी होती है इस बात से कि वैज्ञानिकों को यह पता ही नहीं था कि कैलिफोर्निया और जापान के बीच समुद्र के सिवाय बहुत कुछ और भी था।

राजमहल के सारे लोग मुझे जान गए थे। महिलाओं को मैं बेहद पसंद था। वह मुझे कपड़े पहनातीं, राजमहल में रहना मेरे लिए और भी ज्यादा अच्छा होता, अगर कुछ आपत्तिजनक परिस्थितियां नहीं आई होतीं। उस राजमहल में एक और छोटे कद का आदमी था, जो 30 फीट ऊंचा था। मेरे आने से पहले वो रानी और अन्य लोगों का मनोरंजन करता था। मगर मेरे आने से वो अब सबसे छोटा नहीं रहा था।

कभी-कभी मैं ग्लूमडालक्लिच के बगीचे में भी जाता था। एक दिन वो छोटा आदमी हमारे पीछे-पीछे बाग में आ गया। मैं इधर-उधर चल रहा था। मुझे सेब के पेड़ के नीचे देखकर उसने सेब का पेड़ जोर से हिलाया। कुछ सेब मेरे ऊपर आकर गिर पड़े। एक सेब जोर से मेरे पीठ पर गिरा। मैं गिर पड़ा। ज्यादा चोट नहीं आई, लेकिन मैं हिल गया था। आवाज सुनकर मेरी छोटी नर्स दौड़कर आई। वह उस आदमी को रानी के पास ले जाकर शिकायत करना चाहती थी, किंतु मैंने मना कर दिया।

अगले दिन खाने के वक्त भी उसने यही किया, खाने के बाद जब सब चले गए थे, ग्लूडालक्लिच भी कहीं गई हुई थी, वह आया और मुझे उठाकर क्रीम के डोंगे में डालकर भाग गया। फिर छोटी नर्स ने आकर मुझे निकाला और क्रीम साफ की। इतने में रानी भी आ गई और बहुत नाराज हुईं। उसने उस

छोटे कद के आदमी को उस क्रीम को पीने का आदेश दिया। इस हरकत के लिए फिर उस आदमी को निकाल दिया गया। अब मैं निश्चिंत था।

गर्मियों में मक्खियां बहुत तंग करती थीं। वहां की मक्खियां भी बहुत बड़ी थीं। खाने के समय वो कान में हुम-हुम करती रहती थीं। वो छोटा आदमी तो उन्हें अकसर पकड़ लिया करता था, लेकिन मैं उन्हें अपनी तलवार से मारता था। कभी-कभी रानी यह देखकर मेरा मजाक भी उड़ाती थीं। वह मुझसे पूछती थीं, "क्या तुम्हारे देश के लोग इसी तरह डरते हैं?"

एक दिन ग्लूडालक्लिच ने मुझे बगीचे में ले जाकर छोड़ दिया। अचानक मौसम बिगड़ा और ओले पड़ने लगे। मैंने खुद को बहुत बचाना चाहा, लेकिन उन ओलों से मुझको काफी चोट आई।

एक बार फिर बड़ा खतरनाक एक्सीडेंट हुआ। मैंने ग्लूडालक्लिच से कहा, "मुझे आराम करने के लिए बगीचे में छोड़ दे।" वह मुझे डिब्बे में बंद करके चली गई। अचानक पड़ोस का एक कुत्ता आया और मुझे डिब्बे समेत मुंह में डालकर चला गया। वो तो किस्मत अच्छी थी कि माली की नजर मुझ पर पड़ गई और कुत्ते से छुड़ाकर मुझे अपने हाथों में उठाया। फिर प्यार से पूछा, "तुम ठीक तो हो ना?"

मैं अपने होश में नहीं था। वह मुझे मेरी छोटी नर्स के पास ले गया। वह बहुत परेशान हो गई थी।

कुछ चिड़ियों से भी यहां सावधान रहना पड़ता था। सबसे ज्यादा खतरा मुझे बंदर से था। एक दिन मैं अपने कमरे में बैठा था। ग्लूडालक्लिच ने खिड़की-दरवाजे खुले छोड़ रखे थे, ताकि ताजी हवा अंदर आ सके। मैं चुपचाप बैठा अपने परिवार के बारे में सोच रहा था। अचानक मुझे किसी की आवाज आई। पहले तो मैं छिप गया, फिर हिम्मत करके देखा तो खिड़की के बाहर एक बंदर बैठा था। वह बंदर देखने में बहुत बड़ा था। वो मेरी खिड़की के पास जाकर अंदर झांकने लगा। मैं अपने बिस्तर के नीचे छिप गया। मगर अगले ही पल वो अंदर आया और मेरा कोट पकड़ कर उसने मुझे उठा लिया। उसने मुझे बड़े प्यार से उठाया। मगर फिर भी मुझे उलझन हो रही थी। वो मुझे गौर से देख रहा था। शायद वो मुझे भी अपनी प्रजाति का समझ रहा था।

तभी ग्लूडालक्लिच कमरे में आ गई। वो समझ गई कुछ गड़बड़ हो गई है। उसने चारों तरफ नजरें घुमाईं और तीन पैरों पर एक बंदर को खड़ा देखा,

क्योंकि चौथे पैर से तो उसने मुझे पकड़ा हुआ था। ग्लूडालक्लिच ने शोर मचाया तो राजमहल के नौकर चारों तरफ से आ गए। कुछ लोग बंदर को मुझसे अलग करने के लिए सीढ़ी पर चढ़े। तभी बंदर ने मुझे जमीन पर फेंका और चला गया। राजा और रानी भी वहां आ गए थे। फिर एक लड़के ने सीढ़ी पर चढ़कर मुझे उतारा, उसने मुझे अपनी जेब में रखा और नीचे ले आया।

मैं बुरी तरह घबराया हुआ था। मैं पंद्रह दिनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा। राजा-रानी और दरबार के लोग मुझे देखने आते रहते थे। राजा ने बंदर को मारने का हुक्म दे दिया और साथ ही राजमहल के आसपास से सभी जानवरों को हटाने को कहा।

ठीक होने के बाद मैं राजा को शुक्रिया कहने पहुंचा और उन्होंने मुझसे लंबी बातचीत की। उन्होंने यह भी पूछा कि बंदर ने जब मुझे जकड़ रखा था तो मैं कैसा महसूस कर रहा था। राजा ने यह भी पूछा, "ऐसी स्थिति में मेरे देश में क्या होता है?"

मैंने उन्हें बताया, "हमारे यूरोप में बंदर नहीं होते हैं। उनको लाना पड़ता है, सर्कस दिखाने के लिए। वैसे भी हमारे देश के बंदर बहुत छोटे होते हैं। मैं उनसे आसानी से निपट लेता हूं।"

सभी लोग मेरी बात सुनकर हंस पड़े।

❑❑

7

मेरा बचाव

जब भी मैं उदास होता, रानी मुझे खुश करने की भरपूर कोशिश करती थी। एक दिन उन्होंने पूछा, "क्या मुझे नाव चलानी आती है? शायद उस तरह का व्यायाम सेहत के लिए ठीक होता।"

मैंने कहा, "मैंने जहाज चलाने में बहुत मल्लाहों की मदद की है। किंतु इस देश में ऐसा करना मेरे लिए बहुत मुश्किल है, क्योंकि यहां की नाव भी हमारे जहाज से बड़ी है।" रानी ने मेरे हिसाब की छोटी-सी नाव बनाने का आदेश दिया।

दस दिन के अंदर मेरी छोटी-सी नाव तैयार हो गई, इसमें 8-10 लोग बैठ सकते थे। यह बहुत अच्छी नाव थी। तैयार होने के बाद इसको रानी के पास रखा जाता। इसके अलावा राजमहल के बड़े कमरे में पानी भरा गया, जो रोज बदला जाता था। मैं यहां नाव चलाता रहता था। कभी-कभी इससे मेरा मनोरंजन होता, तो कभी मैं रानी और अन्य लोगों को इसे चलाकर खुश करता। कभी-कभी तो वहां की दासियां मेरी नाव को अपने पंखों से हवा देती। कभी-कभी वहां के नौकर उसे चलाने के लिए अपने मुंह से फूंक मारते। इससे राजमहल के सभी लोगों का खूब मनोरंजन होता था।

एक दिन एक मेंढ़क उसमें घुस गया। जब मैं नाव चलाने लगा तो वो नाव के ऊपर आ गया। पूरे नाव में वह उछल-कूद करने लगा। मैंने उसे चप्पू से भगाने की बहुत कोशिश की। काफी कोशिश के बाद वो कूदकर भाग गया।

मुझे विश्वास हो रहा था कि अब मैं अपने देश वापस जा सकता हूं। लेकिन कैसे? जिस जहाज में मैं सवार होकर आया था, वो वहां के लोगों के लिए बहुत छोटी चीज थी। राजा ने कहा, "अगर कभी किसी को कोई जहाज दिखाई पड़े, तो उसे पकड़कर और उसके यात्रियों को बंदी बनाकर यहां लाया

जाए, ताकि मेरे लायक कोई स्त्री मिल जाए और मैं यहीं बस जाऊं।"

यह विचार मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि मेरे बच्चे भी यहां मेरी तरह पिजरों में बंद रहकर लोगों का मनोरंजन करें। हालांकि मेरे साथ सबका व्यवहार अच्छा था, राजा-रानी मुझे बेहद प्यार करते थे, मगर फिर भी मुझे मेरा देश याद आता था। मैं अब आजाद घूमना चाहता था।

भगवान की दया से मेरी इच्छा जल्दी पूरी होती नजर आ रही थी। मैंने इस देश में दो साल बिताए थे। तीसरे साल राजा और रानी ने राज्य के दक्षिण तट की तरफ घूमने जाने का फैसला किया। ग्लूडालक्लिच भी हमारे साथ थी। मैं उसके साथ एक डिब्बे में था। क्योंकि यात्रा लंबी थी इसलिए मैंने बढ़ई से कहा कि वह चारों कोनों से एक तरह से लटकता हुआ बिस्तर बना दे। मैंने डिब्बे में एक छेद भी करवाया, ताकि वहां ताजी हवा आ सके।

जब हमारी यात्रा खत्म हुई, तो राजा ने वहां रुकने का फैसला किया। उनका एक महल भी था—फिलान फलासनिक शहर में। हम लोग भी थके हुए थे। ग्लूडालक्लिच अपने कमरे में आराम करने चली गई। मैं समुद्र देखना चाहता था, क्योंकि शायद यहां से ही मैं भागने में कामयाब हो सकता था। मैंने तबीयत खराब होने का बहाना बनाया और समुद्र किनारे ताजी हवा में जाने का अनुरोध किया। उसने मुझे एक नौकर के साथ भेजा इस निर्देश के साथ कि वह मेरा खयाल रखे। हम आधे घंटे में समुद्र तट पर पहुंच गए। मैंने नौकर से डिब्बा जमीन पर रखने को कहा। मैंने खिड़कियां खोल कर देखा और सोचा कि शायद यहां से भाग सकूंगा! मैं उदास और थका हुआ भी था। मैंने नौकर से कहा, "मुझे अकेला छोड़ दे।" उसने डिब्बा बंद किया और चला गया।

उस नौकर को लगा कि मैं सुरक्षित हूं, इसलिए वो इधर-उधर चिड़ियों के अंडों को देखने चला गया। मुझे पता था कि उसे यह सब बहुत पसंद है। अचानक एक जोर से आवाज आई, जैसे किसी ने मुझे उठा रखा है, मैं हवा में हूं। मैं जोर-जोर से चिल्लाने लगा, लेकिन मुझे सिर्फ चिड़िया के पंख फड़फड़ाने की आवाज आ रही थी।

मैं समझ गया कि क्या हुआ है। एक चील ने मेरा डिब्बा अपने पंजों में उठा रखा था। क्योंकि चील समझ सकती है कि डिब्बे के अंदर कोई जीव है। उस चील ने मेरा डिब्बा खोलने की बहुत कोशिश की, लेकिन कामयाब

नहीं हो पाई। अचानक मैंने अपने आपको गिरता हुआ महसूस किया। मेरी सांस रुक गई थी। लग रहा था कि मैं नागरफाल से गिर रहा हूं। मुझे अहसास हुआ कि मैं समुद्र में गिर गया हूं। मैंने रानी और उनके बढ़ई को मन-ही-मन धन्यवाद दिया, जिन्होंने इतना मजबूत डिब्बा बनवाया था। यदि वो डिब्बा इतना मजबूत नहीं होता, तो मैं आज जिंदा नहीं होता।

अब मैं अपनी छोटी नर्स से बहुत दूर आ गया था। मुझे पता था वो बहुत दुखी होगी और उसको महारानी से डांट भी पड़ रही होगी। मुझे पानी की आवाज आ रही थी। मेरी खिड़की के पास खूब पानी आ रहा था। मुझे अंधेरा दिखाई दे रहा था। मैं कुर्सी पर खड़ा हो गया और अपने डिब्बे के छेद से बाहर आवाजें लगाने लगा। मैंने सभी भाषाओं में मदद की आवाज लगाई। अपना रूमाल बाहर निकालकर हवा में हिलाया कि शायद कोई मल्लाह मुझे देख सके। एक घंटा बीत गया, लेकिन कोई नहीं आया। फिर मुझे लगा कोई मेरा डिब्बा उठा रहा है। मैं खुश हो गया था कि कोई आ गया है। वहां मैंने किसी को अंग्रेजी में बोलते हुए सुना, "कोई है यहां पर तो प्लीज बोलो।

"मैं एक अंग्रेज हूं, मुझे यहां से आजाद करो," मैंने चिल्लाकर कहा।

आवाज आई, "तुम सुरक्षित हो और तुम्हें जहाज पर ले जाया जा रहा है।" मुझसे कहा गया कि एक बढ़ई को भी बुलाया जा रहा है। जो मेरे डिब्बे में एक बड़ा-सा छेद बनाएगा। फिर मुझे सीढ़ी दी गई और मैं किसी तरह से उस डिब्बे से बाहर निकला।

वो मल्लाह मुझे देखकर हैरान थे। उन्होंने मुझसे कई सवाल किए। मैं इन सवालों से परेशान हो चुका था। पिछले दो सालों से तो मैं दानव जैसे लोगों के बीच था। उस जहाज का कप्तान, मिस्टर थॉमस विलकोवस एक अच्छा आदमी था। उसने देखा कि मैं अब बेहोश होने वाला हूं। वो मुझे अपने केबिन में ले गया और आराम करने को कहा। मगर इससे पहले कि मैं सोने के लिए जाता, मैंने कहा, "जिस डिब्बे में मैं बंद था, उसके अंदर का सारा कीमती सामान मंगवाया जाए।" मैंने बताया कि उसमें दो कुर्सियां, एक मेज और एक अलमारी है। मेरा बिस्तर, मखमली सिल्क के गद्दे आदि, मैं वह सब चीजें दिखाना चाहता था। कप्तान तो मेरी बातें सुनकर मुझे पागल समझ रहा था। फिर भी उसने मुझे आराम करने के लिए कहा और अपने आदमियों से कहकर सारा सामान भी मंगवाया। किंतु उनके आदमियों ने फर्नीचर का बुरा

हाल कर दिया था। किसी तरह सामान को तोड़-ताड़ कर बाहर निकाला और डिब्बा समुद्र में फेंक दिया।

मैं बहुत देर तक सोया और जब उठा, तो आठ बज चुके थे। कप्तान ने मेरे लिए खाना मंगवाया। फिर उन्होंने मुझे बताया किस तरह मुझे बचाया गया है। उन्होंने बताया कि दिन में 12 बजे उन्होंने समुद्र में कुछ देखा था। पास आकर देखा तो लकड़ी का डिब्बा था। उसके आदमी मुझे लाने में पहले तो डर रहे थे, क्योंकि तैरता हुआ घर देखकर वो हैरान थे। फिर रस्सी से बांधकर मुझे लाया गया। वो मेरा रूमाल, जिसे मैंने लहराया था, देखकर वो समझ गए थे कि अंदर कोई बदकिस्मत आदमी है।

मैंने कप्तान से पूछा, "क्या आपने मुझे किसी बड़े पक्षी के पंजे में भी देखा था?" आसमान में शायद उन्होंने ध्यान नहीं दिया था।

कप्तान जानना चाहता था कि मेरे साथ क्या और कैसे हुआ। उनको लगा शायद किसी राजा ने मुझे दंडित किया है। मैं कोई अपराधी तो नहीं। उनको मेरा व्यवहार बड़ा गलत-सा लगा। खाना खाते समय मैं बर्तनों को अजीब तरीके से देख रहा था। खाना भी ठीक से नहीं खा पा रहा था। कप्तान मेरे बीते हुए कल के बारे में जानना चाहते थे। आखिर में मैंने उनको अपनी पूरी कहानी सुनाई और उनसे वादा लिया कि वे मेरी बात को ध्यान से सुनेंगे और मुझ पर भरोसा भी करेंगे। मैंने उनको कुछ सामान दिखाया, जो मैंने वहां बनाया था-जैसे एक कंघा, जिसे मैंने राजा की दाढ़ी के बाल से तैयार किया था। एक सोने की अंगूठी, जो रानी ने मेरे सिर पर ताज की तरह पहनाई थी। मैंने जो पैंट पहनी हुई थी, वो चूहे के चमड़े से बनी थी।

कप्तान को, जो खुद एक ईमानदार आदमी लग रहा था, मेरी बातों पर भरोसा होने लगा था। वो पूछने लगा, "मैं इतनी जोर से क्यों बोलता हूं?"

मैंने कहा, "पिछले दो सालों से उस देश में मैं जोर से बोल रहा था, इसलिए आदत-सी हो गई है।" कप्तान मेरी बात सुनकर जोर से हंसा और बोला कि मुझे उस देश के बारे में एक किताब लिखनी चाहिए। 3 जून, 1776 को करीब नौ महीने बाद जब मैं इग्लैंड पहुंचा तो सबसे पहले मैं अपनी पत्नी से मिला। शुरू के कुछ दिन तो मैं जमीन पर देखता ही नहीं था, क्योंकि मुझे 40 फीट ऊपर देखकर बात करने की आदत हो गई थी। मैंने अपनी पत्नी-बच्चों और दोस्तों को पूरी कहानी सुनाई।

तृतीय भाग

I

समुद्र पर वापसी

मुझे घर पर आए दस दिन ही हुए थे। ग्यारहवें दिन कप्तान विलियम रॉबिन्सन मेरे घर आए और मुझे जहाज का सर्जन बनने का न्यौता दिया। वो एक ईमानदार इंसान थे, मैं उनको मना न कर सका। मुझे यात्राओं का शौक तो वैसे भी था, इसलिए मेरी पुरानी दुखद यात्रा भी मुझे न रोक सकी।

5 अगस्त, 1706 को हम चले और 11 अप्रैल, 1707 को सेंट जार्जस फोर्ट पहुंच गए। करीब तीन दिन की यात्रा के बाद हमें तूफान का सामना करना पड़ा, जिसकी वजह से हम पहले उत्तर की तरफ, तो बाद में पूरब की तरफ पहुंच गए। जब मौसम ठीक हुआ तो हम दो समुद्री डाकुओं की गिरफ्त में थे। उनमें से एक डच था। उनको पता चल गया था कि हम अंग्रेज हैं, इसलिए उसने हम दोनों को पीठ से बांधकर समुद्र में फेंकने का हुक्म दिया। मैं डच जानता था इसलिए मैंने कहा, "हम दोनों ईसाई हैं, कृपया हम पर दया करो!" उनको हमारे ऊपर गुस्सा आ गया। उन डाकुओं द्वारा चलाए गए बड़े जहाज का कप्तान एक जापानी था, जो थोड़ी बहुत डच जानता था। उसने मेरे पास आकर कुछ सवाल किए, जिसका मैंने सही जबाव दिया। अंत में वो बोला, "हम तुम्हें नहीं मारेंगे।"

जहाज के दूसरे लोगों को दोनों लुटेरों ने आपस में आधा-आधा बांट लिया। मुझसे बोला गया कि एक छोटी नाव में चार दिन का खाना डालकर समुद्र में छोड़ दिया जाएगा। जब मैं वहां से जा रहा था, तब भी वो मुझे गालियां बक रहे थे।

दसवें दिन, हमको दो समुद्री डाकुओं ने पकड़ लिया।

जब मैं समुद्री डाकुओं से दूर निकल आया, तो मैंने दक्षिण-पूर्वी दिशा की तरफ कुछ द्वीप देखे। मैं नाव किनारे पर लगाकर उस तरफ गया और वहां उतर गया।

दसवें दिन, हमें दो समुद्री डाकुओं ने पकड़ लिया।

आसमान बिल्कुल साफ था। सूरज चमक रहा था। मगर थोड़ी ही देर के बाद बादल छा गए। मैं पीछे मुड़कर जाने लगा। तभी मैंने द्वीप की तरफ एक बड़े से अपारदर्शी जीव को आते देखा, जो कम-से-कम दो मील ऊंचा था। उसने 6-7 मिनट तक सूरज को छिपा लिया था। पास आने पर वो मजबूत-सी वस्तु लगी, वो मेरी तरफ ही आ रहा था। मैंने अपने दूरबीन निकाली तो देखा बहुत बड़ी तादाद में लोग ऊपर-नीचे आ रहे थे। समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या चीज है, मगर मैं देखने लगा आखिर वो द्वीप कहां जाएगा।

थोड़ी देर में द्वीप एक जगह जाकर रुक गया था। थोड़ी देर बाद वो फैल गया। मुझे उसमें बहुत-से लोग नजर आने लगे। कुछ लोग नाव चला रहे थे तो कुछ मछली पकड़ रहे थे। मैंने अपना रूमाल हिलाया। उनको आवाज लगाई। करीब आधा घंटा बीत गया। उसके बाद वो द्वीप अचानक से ऊंचा हो गया—करीब मुझसे 100 मील दूर। आखिर मैं उस द्वीप से एक आदमी ने आवाज लगाई। वो कोई इटेलियन था। मैंने भी उसका जवाब इटेलियन भाषा में ही दिया। उन्होंने मुझे पत्थरों पर खड़ा देखा तो अपने पास बुलाया। मेरी समझ में नहीं आया कि किस तरह उन लोगों ने उड़ता हुआ द्वीप बनाया था। उस द्वीप का एक कोना मेरी तरफ था। उन्होंने उस द्वीप को नीचे झुकाया और एक सीट जोड़ दी तथा फिर मुझे सीट पर बैठाकर अपनी तरफ खींच लिया।

❑❑

2

उड़ता हुआ द्वीप

थोड़ी देर में मैं उन लोगों की भीड़ में पहुंच गया। वो सब बड़े अजीब लग रहे थे। हर आदमी का सिर और एक आंख टेढ़ी लग रही थी। उनके कपड़ों पर संगीत-वादनों के चिह्न नजर आ रहे थे। उनमें से कुछ तो नौकर मालूम पड़ रहे थे, क्योंकि उनके हाथ में एक पट्टा था। उनका काम था एक आदमी की बात को, जो बोल रहा है, उसको सुनने वाले के कान तक पहुंचाना।

मुझे राजा के पास ले जाया गया, जो अपने हाथ में गणित के कुछ औजार लिए हुआ था। हमको एक घंटे तक इंतजार करना पड़ा। फिर राजा को उससे कुछ बोलना था, तो उस पट्टे को राजा के मुंह के आगे चलाया गया और फिर मेरे कान के पास लाया गया। मैं राजा द्वारा बोले जाने वाली भाषा नहीं जानता था। उसके बाद फिर मैंने खाना खाया।

एक टीचर ने मुझे उस द्वीप पर बोलने वाली भाषा सिखाई। उस द्वीप का नाम था 'लापुता' यानी तैरता द्वीप। एक दर्जी ने मेरे कपड़े भी सिले। फिर राजा ने उस द्वीप को चलने का हुक्म दिया। उसको देश की राजधानी की तरफ उठाया गया। राजधानी का नाम लागाडो था। जैसे ही द्वीप घूमा, रास्ते में राजा के द्वारा भेजे गए संदेश लोगों में बांट दिए गए। लापुटन की भाषा गणित और संगीत की धुनों पर आधारित थी। लुपटन्स को रेखागणित बिल्कुल पसंद नहीं थी। इनको इमारतों में, ज्योतिष विद्या और आसमान में रहने वाले सितारों में ज्यादा रुचि थी। मैंने राजा से उस द्वीप में घूमने की आज्ञा ले ली। मैं यह देखना चाहता था कि यह घूमता कैसे है!

दरअसल, वो तैरता द्वीप गोलाई में था। उसका व्यास 7837 यार्ड या 4 मील चौड़ा था। द्वीप के बीच में 50 यार्ड का अंतराल था, जहां से ज्योतिषी लोग एक बड़े से गुंबद में चले जाते थे, जिसे फ्लानडोना मेगनोल या ज्योतिषी गुफा भी कहते हैं।

मुझे राजा के पास ले जाया गया, जो अपने हाथ में गणित के कुछ औजार लिए हुआ था।

उस गुफा में 20 लैंप थे, जो रोशनी से पूरी गुफा को जगमगा रहे थे। पूरी गुफा दूरबीन और ज्योतिष संबंधित वस्तुओं से भरी पड़ी थी। वहां एक बहुत बड़े आकार का बड़ा-सा पत्थर भी था, जिस पर पूरा द्वीप टिका हुआ था। वो लोडस्टोन (पत्थर) एक जुलाहा की झरनी की तरह था और वो चुंबक से चिपका हुआ था।

वो चुंबक उस द्वीप को हिलाता था। जब राजा अपने देश के किसी राज्य को दंड देता था, तो द्वीप ऊपर की तरफ उठा देता था और दंडनीय हिस्सा नीचे चला जाता था—सूरज की रोशनी और बरसात से काफी दूर। उस देश का एक राज्य इन सब तकलीफों से दूर रहता था, क्योंकि वहां अनाज की पैदावार ज्यादा थी। राजा और उसके परिवार को द्वीप छोड़ना मना था।

❑❑

3

एकेडमी घूमना

मैं उस द्वीप पर खुद को अकेला महसूस करता था, क्योंकि वहां लोगों को ज्यातिष, गणित, संगीत का शौक था। सिर्फ एक आदमी था—लार्ड ऑफ कोर्ट, जो बहुत अक्लमंद था, क्योंकि उसको यह शौक नहीं थे। मगर लापुटा के लोग उसको बेवकूफ समझते थे।

16 फरवरी को मैंने राजा से वहां से जाने की इजाजत मांगी। राजा ने मुझे 200 पाउंड उपहार के तौर पर दिए, साथ ही एक पत्र भी, जो उनके मित्र के नाम का था, जो मेरी लागाडो में मदद करता। फिर द्वीप को मेरे अनुसार घुमाया गया और मैं राजा द्वारा बताई जगह पर पहुंच गया। उनके मित्र ने मेरा प्यार से स्वागत किया। उसका नाम मुनोडी था। उसने मुझे रहने को घर दिया।

अगले दिन मुनोडी मुझे अपने रथ में बैठा कर अपने शहर घुमाने ले गया। यह शहर लंदन से आधा था। वहां के घर अजीब ढंग से बने थे। ज्यादातर घर मरम्मत मांग रहे थे। वहां की मिट्टी भी उपजाऊ नहीं लग रही थी और लोगों की हालत भी खराब थी। उसके बाद हम मुनोडी के घर पहुंचे। रास्ते में बहुत से बंजर खेत मिले और आखिर में हम हरे-भरे खेतों में पहुंचे, जो मुनोडी के थे।

मुनोडी प्रथम श्रेणी का युवक था और काफी समय लागाडो का गवर्नर भी रह चुका था, किंतु कुछ समय के बाद इसको वहां से निकाल दिया गया। हालांकि राजा उसके साथ अच्छा व्यवहार करता था, परंतु उसे इतना योग्य व्यक्ति नहीं समझता था। आखिर में हम एक ऐसे मकान पर पहुंचे, जो अच्छा बना हुआ था। वह पुराने डिजाइन का था। उसके फाउन्टेन, बगीचे, झरने, वगैरह पुराने अदांज के बने हुए थे।

मुनोडी ने बताया कि करीब चालीस साल पहले कुछ लोग लापुटा और

फिर मैं दूसरे कमरे में पहुंचा, जिसकी दीवारें और छत मकड़ी के जालों से भरी पड़ी थीं।

नई चीजें सीखकर आए थे–गणित और कला की। उन्होंने लागाडो में एक अकेडमी बनाई, जहां खेती और नई कारीगरी पर काम किया जाए। वो यहां के लोगों के लिए आरामदेह और बेहतर चीजें बनाना चाहते थे। हालांकि कोई नतीजा नहीं निकला।

मुनोडी अब अकेडमी नहीं जाता था, क्योंकि उसकी अच्छी छवि नहीं थी। इसलिए उसने मुझे एक दोस्त के साथ अकेडमी भेजा। वो अकेडमी एक बिल्डिंग में नहीं थी, बल्कि बहुत सारे घरों को मिलाकर बनी थी। वहां मेरा अच्छा स्वागत हुआ। वहां के हर कमरे में प्रोजेक्ट लगे थे। मैं पूरे 500 कमरों में गया।

सबसे पहले मैंने एक विचित्र आदमी देखा, उसके हाथ-मुंह गंदे थे और बाल और दाढ़ी बढ़ी हुई थी। उसके कपड़े फटे हुए थे। मुझे पता चला कि वो पिछले आठ सालों से खीरे में से रोशनी निकाल रहा है। उसने कहा कि अगले आठ सालों में वह गवर्नर के बगीचे को रोशनी से भरने में कामयाब हो जाएगा।

मैंने उसको एक उपहार दिया, जो मुनोडी ने भिजवाया था। वहां के लोग भीख मांगते थे।

फिर मैं दूसरे कमरे में पहुंचा, जिसकी दीवारें और छत मकड़ी के जालों से भरी पड़ी थीं। वहां अंदर जाने का रास्ता बहुत छोटा-सा था। जैसे ही मैं अंदर घुसा। वो जोर से बोला, "मकड़ी के जालों को छेड़ना नहीं!" फिर वो बोला, "मकड़ी की वजह से सिल्क पूरा बच जाएगा।"

मैं पूरी तरह उसकी बात से सहमत हो गया। फिर उसने बहुत सारी मक्खियां दिखाईं, जो रंग-बिरंगी थीं। यह मकड़ी का खाना भी था। मकड़ी से अच्छे धागे पाने के लिए मकड़ी को अच्छा भोजन देना जरूरी था।

मैं एक ऐसे वैज्ञानिक से भी मिला, जो इंसान के निकले हुए पदार्थों को वापस भोजन में तबदील कर दे। एक इंजीनियर तो ऐसा घर बना रहा था, जिसकी छत नीचे की तरफ हो। एक डॉक्टर तो हवा भरकर मरीजों को ठीक कर रहा था। एक कृषि वैज्ञानिक ऐसा था जो पहले खाने को जमीन में डालता था, उसे सींचता और फिर उससे बीज पैदा करता था।

एक वैज्ञानिक तो सूर्य-धरती के तालमेल को अपने अनुसार घुमाने की कोशिश कर रहा था।

मैं दूसरे कमरे में गया, जहां की दीवारों और छतों पर मकड़ी के जाले भरे हुए थे।

अभी तक मैंने अकेडमी का एक हिस्सा ही देखा था। उसके बाद में एक ऐसे कलाकार से मिला, जिसे लोग 'यूनिवर्सल आर्टिस्ट' कहते थे। वो पिछले तीस सालों से इंसान की बेहतर जिंदगी के लिए काम कर रहा था। उसके पास दो बड़े कमरे थे, जिसमें 50 लोग काम कर रहे थे। कुछ लोग हवा को एक सूखी धातु के रूप में बदलने का कार्य कर रहे थे। कुछ कंचों को मुलायम करके उसके तकिए बनाने में जुटे हुए थे।

एक बड़ा आर्टिस्ट खुद बड़े-बड़े डिजाइन बनाने में व्यस्त था। पहले वाला तो जमीन को बो रहा था और दूसरा वाला अलग-अलग तरीकों की गोंद, पदार्थ और सब्जियां बना रहा था, जिनको भेड़ के बछड़े पर लगाया जाए ताकि वो ऊन पैदा न करे। वो नंगी भेड़ों को पूरे राज्य में घुमाना चाहता था।

दूसरी तरफ अकेडमी के कुछ लोग कुछ याद कर रहे थे। एक कमरे में एक प्रोफेसर के 40 बच्चे थे। वो ज्ञान बढ़ाने पर काम कर रहे थे, जिसमें कुछ प्रेक्टिकल और मैकेनिकल ऑपरेशन शामिल थे। उसने कहा, "इस तरह के विचार किसी के दिमाग में नहीं आएंगे।" उसने आगे कहा, "हमारे तरीकों से लोग आसानी से विज्ञान और कला याद कर सकेंगे। थोड़ी-सी मेहनत से ही गणित, भूगोल, कविताएं, साहित्य आदि पर किताबें लिख सकेंगे।"

फिर हम एक दूसरे कमरे में जा पहुंचे, जो 20 स्क्वायर फीट चौड़ा था। वहां सारे विद्यार्थी लाइन में बैठे थे। वहां छोटे-छोटे लकड़ी के खांचे थे, डाई की तरह उन्हें दूसरे तारों से जोड़ा गया था। इन लकड़ी के खांचों पर पेपर चिपका हुआ था। इन पेपरों पर उनकी भाषा के काल तथा और अन्य कई बातें लिखी हुई थीं।

फिर प्रोफेसर ने अपना इंजन दिखाया। उसने हुक्म दिया और सारे बच्चों ने अपने हाथों में लोहे का हैंडल पकड़ लिया। वो हैंडल उन लोगों ने मोड़ दिया। दूसरी तरफ उन खांचों पर जो लिखा था, एकदम से बदल गया। फिर उसने अपने बच्चों से उस फ्रेम पर लिखी बातों को पढ़ने के लिए कहा। ऐसा चार-पांच बार किया गया। उस इंजन को इस तरह से बनाया गया था कि हर बार नए शब्द निकलकर आते थे।

ये विद्यार्थी दिन में छह घंटे काम करते थे। उस प्रोफेसर ने इस तरह के

बहुत सारे खांचे दिखाए। उसने कहा, "अगर हमको 500 लोग और कुछ पैसे और मिल जाएं, तो हम नए तरीकों के और बहुत सारे फ्रेम लागाडो में बना सकते हैं।

"इस तरह की खोज का इरादा बचपन से मेरे दिमाग में था। मैंने अपना पूरा शब्दकोश इन फ्रेमों को बनाने में खर्च कर दिया। इसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और भाषाओं के अन्य चिह्न भी शामिल थे।"

एक दूसरा अध्यापक बच्चों को पेपर पर गणित के चिह्नों को लिखकर पढ़ा रहा था।

कुछ अजीब-सी दुनिया थी यह, कुछ अजीब-सा पागलपन था यहां। उन्होंने कहा कि राज्य के संचालक अपनी कला और ज्ञान के आधार पर चुने जाने चाहिए। एक वैज्ञानिक का तो मानना था कि मंत्रियों से लात मारकर और सुई चुभाकर काम कराना चाहिए ताकि वो कुछ भूल न पाएं।

एक ऐसा डॉक्टर भी था, जिसने हर तरह की बीमारी के उपचार ढूंढ़ लिए थे और राज्य में होने वाले घोटालों के भी। दो प्रोफेसर पैसों को बढ़ाने के बारे में विचार कर रहे थे। पहले ने कहा–

"अधर्मी और चालाक, धोखेबाज लोगों पर टैक्स लगाया जाए, हर आदमी के ऊपर टैक्स उनके अपराधों के हिसाब से तय किए जाए।"

दूसरे का जबाव बिल्कुल अलग था, "इंसान पर टैक्स उसकी अच्छाइयों और खूबियों के हिसाब से लगाया जाए, मतलब विशिष्टता के आधार पर तय किया जाए।"

"सबसे ज्यादा टैक्स वो देगा, जो दूसरे सेक्स (लिंग) के लोगों को चाहता होगा। बुद्धिमान और चतुर इंसान ज्यादा टैक्स देगा," एक अन्य प्रोफेसर का कहना था।

"औरतें अपने सौंदर्य के हिसाब से टैक्स भरेंगी अर्थात् जिसके पास जितने अच्छे कपड़े होंगे वो उतना टैक्स भरेंगी।" प्रोफेसर ने इस समझौते में मुझे भी शामिल किया था।

आखिर मुझे वहां कुछ बहुत अच्छा नहीं लगा और मैं वापस इंग्लैंड आ गया।

❑❑

4

मायावी जादूगरों का द्वीप

जिस महासागर पर यह द्वीप बसा था, उसका आगे का हिस्सा अमेरिका के कैलिफोर्निया की तरफ जाता था—करीब 150 फीट की दूरी पर लागाडो से। जापान के महाराजा और लगनेग के राजा के बीच कड़ा समझौता था—एक देश से दूसरे देश जाने का।

मुझे यूरोप जाने के लिए उधर से ही निकलना था। मैंने दो घोड़ियां किराए पर लीं ताकि मैं उन पर अपना सामान रखकर वहां से जा सकूं।

जब मैं मालडोनाडा के बंदरगाह पर पहुंचा, तो वहां कोई जहाज नहीं था, जो लगनेग जा रहा हो। तभी मेरी मुलाकात एक आदमी से हुई, जिसने मेरा प्यार से स्वागत किया। उसने कहा, "लगनेग जाने वाले जहाज को तैयार होने में एक महीना लगेगा। इसलिए बेहतर होगा कि मैं ग्लूबडबड्रिब द्वीप की सैर करने जाऊं, जो वहां से दक्षिण-पश्चिमी दिशा में था।" उसका दोस्त और वो दोनों मेरे साथ चलने को तैयार हो गए।

ग्लूबडबड्रिब का मतलब होता है—मायावी। वह देश जादूगरों का था। इस द्वीप के लोग एक-दूसरे से ही विवाह करते थे और सबसे बड़ा व्यक्ति ही वहां का राजा होता था। कुछ अजीब से लोग वहां के राज्यपाल और उसके परिवार की देखरेख करते थे। वह किसी भी मरे हुए व्यक्ति को वापस बुला लेते और 24 घंटे काम करवा सकते थे। लेकिन फिर उसको तीन महीने तक नहीं बुला सकते थे।

हम सुबह ग्यारह बजे उस द्वीप पर पहुंचे। हम लोगों में से एक आदमी राज्यपाल के पास गया और उसे उसने मेरे आने की सूचना दी। हमको इजाजत मिल गई और हम राजमहल में घुस गए। हम वहां के गार्डों के बीच से निकले। वो बड़े अजीब-से दिखते थे। राजा के कक्ष में पहुंचने से पहले हमसे सवाल पूछे गए। फिर हमको तीन स्टूल बैठने के लिए मिले, जो राजा के

हम राजमहल में घुस गए। हम वहां के गार्डों के बीच से निकले। वो बड़े अजीब से दिखते थे।

सिंहासन से नीचे थे। राजा ने मेरी यात्रा के बारे में पूछा। एक ऊंगली हिलाई और सारे दरबारी जैसे छूमंतर हो गए। मैं यह देखकर घबरा गया। राज्यपाल ने मुझे नुकसान न पहुंचाने का आश्वासन दिया था। मैंने राजा को पूरी कहानी बताई और उसके बाद हमने खाना खाया, जो भूतों ने तैयार किया था।

मैं अलेक्जेंडर द ग्रेट को सेना के कप्तान के रूप में देखना चाहता था। अरबेला के युद्ध के बाद एक उंगली हिलाते ही वो हमारी खिड़की के पास आ गया। फिर अलेक्जेंडर को अंदर बुलाया गया। मुझे उसकी ग्रीक भाषा समझने में दिक्कत आ रही थी। उन्होंने बताया कि यह जहर से नहीं, बल्कि शराब पीने की वजह से मरा थी।

मैंने अगला जो चरित्र देखा वो हनीपाल था, जो ऐलप्स पहाड़ चढ़ रहा था। मैंने सीजर और पाम्पे को भी देखा। मैंने सीजर और ब्रूटिस को बुलाने की भी आशा व्यक्त की। इन दोनों की अच्छी दोस्ती थी।

सीजर ने कहा, "ब्रूटिस अपनी जिंदगी में इतना प्रख्यात नहीं था—वह तो मुझे मारने के बाद प्रसिद्ध हुआ।"

मैंने होयर और एरिसटोटल को भी देखा। राज्यपाल ने दरबार में बहुत सारे प्राचीन समय के लोगों को भी बुला लिया।

होमर बहुत लंबा था और अपनी उम्र के हिसाब से बड़ा सुंदर दिखता था। एरिसटोटल के नैन-नक्श छोटे थे, वह दुबला-पतला था।

मैंने गवर्नर से कहकर डेसकाटिज और गासिंडी को बुलाने को कहा, जिनको मैं एरिसटोटल की चीजों के बारे में बताना चाहता था।

हर वह व्यक्ति जिसे मायावी तरीके से बुलाया गया, वैसा ही दिखता था—ऐसा लगता था जैसे वो जीवित हो।

हम तीनों राजमहल में घुसे, वहां बहुत सारे गार्ड तैनात थे।

❑❑

5

अनोखा रिवाज

हम उस द्वीप पर दस दिन तक रुके, उसके बाद हम चले गए। हमने राज्यपाल से इजाजत ली और मालडोनाडा आ गए। पंद्रह दिन रुकने के बाद एक जहाज लगनेग जाने को तैयार हुआ। 21 अप्रैल, 1708 को क्लूमेगनिशंदी पार करते हुए हम लगनेग पहुंचे। हमने वहां लंगर डाला और पायलट को रुकने के लिए कहा।

कुछ मल्लाहों ने कप्तान को बता दिया था कि मैं एक अनजान व्यक्ति हूं और यात्राएं करता हूं। मैंने उससे उस भाषा में बात की, जो उस शहर में बोली जाती थी। मैंने उनको अपने बारे में विस्तृत जानकारी दी, लेकिन मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि मैं किस देश का निवासी हूं, क्योंकि मुझे जापान जाना था और सिर्फ डच लोगों को ही उनके देश में जाने की इजाजत थी। मैंने वहां के ऑफिसर को बताया कि मेरा जहाज खराब हो गया है और इसके लिए मुझे लापुटा रुकना पड़ा।

मैंने कहा, "मैं जापान जाने का प्रयास कर रहा हूं, ताकि वहां से अपने देश जा सकूं।"

उस ऑफिसर ने कहा, "तुमको एक जगह ही रहना होगा, जब तक मैं कोर्ट से तुम्हारे ठहरने के आदेश न ले लूं।"

करीब पंद्रह दिन के बाद हमारे पास आदेश आए और उसमें एक वारंट था कि मैं और मेरा साथी ट्रालड्रा जाएगा—दस दिन के लिए दस घोड़ों के साथ। जो आदमी मेरे साथ जा रहा था, वो एक सहायक था। हम सबके पास एक-एक घोड़ी थी। वहां के राजा को संदेशा भी भेजा गया, ताकि मेरे मिलने का समय तय हो जाए। वहां का यह रिवाज था कि राजा के सामने वहां की मिट्टी को चूमना पड़ता था।

दो दिन के बाद मैं अपने पेट के बल रेंगता हुआ वहां की जमीन को

चाटते हुए राजा के सामने पहुंचा। क्योंकि मैं एक अनजान आदमी था, तो इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि जमीन बिल्कुल साफ-सुथरी हो। जब कोई दुश्मन वहां आता था, तो वहां की जमीन पर बहुत सारी मिट्टी डाल दी जाती थी।

मैंने एक बार एक बड़े आदमी को आते देखा, जिसका मुंह मिट्टी से भरा पड़ा था। इसलिए वो राजा के सामने कुछ बोल भी न सका।

वहां एक रिवाज और भी था। वहां के राजा को जब अपराधियों को दंड देना होता था, तो वो जमीन पर ब्राऊन पाउडर, जिसमें जहर हो, डलवा देते थे ताकि वो आदमी 24 घंटे में मर जाए।

मैं जब राजा के पास चार यार्ड रेंगकर पहुंचा, तो मैंने चार शब्द बोले, जो मुझे बताए गए थे। ये शब्द इंग्लिश में कुछ इस प्रकार थे–'हमारे राजा सूरज, चांद से भी ज्यादा जिएं।'

उसके बाद राजा ने कोई जबाव नहीं दिया। मेरी समझ में नहीं आया, लेकिन मैंने जबाव दिया, जिस तरह मुझे पहले सिखाया गया था।

जिसका मतलब था, 'मेरी जुबान मेरे दोस्त के मुंह में है।' तुरंत वो लड़का जो मेरा सहायक बनकर आया था, वहां बुलाया गया। फिर राजा ने मुझसे बहुत सारे प्रश्न किए, जिसका मैंने जबाव दिया।

राजा मुझसे बहुत प्रभावित हुआ। उसने मुझे और मेरे साथी के ठहरने के आदेश दिए। मुझे रोज के खाने के लिए पैसा और सोना भी अपने खर्चों के लिए मिलता था।

लुगनाजियंस बहुत ही नम्र और जिज्ञासु व्यक्ति लगता था।

एक दिन वहां के एक अधिकारी ने पूछा, "क्या तुमने हमारे देश में अमर लोगों को देखा है?"

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, "नहीं!" मैंने उनसे अनुरोध किया कि वह मुझे इसकी विस्तृत जानकारी दें।

उसने कहा कि हमारे परिवारों में जो बच्चा बाईं आंख के ऊपर लाल रंग का निशान लेकर पैदा होता है, वो अमर होता है। उस निशान का रंग बदलता रहता है। जब बच्चा बारह साल का होता है, तो इसका रंग हरा हो जाता है और 25 साल की उम्र तक पहुंचते ही यह गहरा नीला रंग का हो जाता है। इस तरह के 1100 लोग दोनों लिंगों के (स्त्री-पुरुष) पूरे राज्य में थे। मैं सोच

मैं सोच रहा था, 'अगर मैं भी अमर होता, तो मैं सबसे अमीर आदमी बन जाता। यदि मैं इस देश में पैदा होता और अमर होता तो...।'

रहा था, 'अगर मैं भी अमर होता, तो मैं सबसे अमीर आदमी बन जाता। यदि मैं इस देश में पैदा होता और अमर होता तो...।'

दूसरा, कला और विज्ञान में मेरी बचपन से ही रुचि होती। मैं राज्य के सारे नेता और आम लोगों के चित्र बनाता। मैं यहां के रीति-रिवाज, भाषा, फैशन और खान-पान में बदलाव करता।

ये अमर लोग और मैं आपस में बातचीत करते, अपने अनुभव आपस में बांटते। अपने अनुभव और सोच के द्वारा भ्रष्टाचार को दूर करते, जो इस दुनिया में फैले हुए हैं। हम राज्यों और महलों, पुराने शहरों, गांव और राजमहलों में भी बदलाव करते। समुद्र की नदियों में सुधार करते। कुछ नए देश बनाते। जो बहुत कठोर देश हैं, उन्हें हरियाली से भर देते।

हम और नई चीजों को पैदा करते, भविष्यवाणियां करते। चांद-सितारों तथा सूरज की चाल और समय को भी नियंत्रण में लेते।

इसके अलावा मुझे यह भी बताया गया था कि 30 साल की उम्र के बाद ज्यादातर अमर लोग उदास हो जाते हैं और 80 साल की उम्र तक अपने को प्यार के काबिल ही नहीं समझते हैं और इनको उन लोगों से जलन होती है, जो मर सकते हैं। इसलिए अगर दो अमर लोगों के बीच शादी होती है, तो 80 साल की उम्र तक वह टूट जाती है।

80 साल की उम्र तक उनको डैड-इन-लॉ माना जाता है। उनके उत्तराधिकारी उनके राज्यों के प्रमुख बन जाते हैं। उनको किसी रोजगार के लायक भी नहीं माना जाता, इसलिए वो गरीबों की तरह आम आदमी की जिंदगी बिताने पर मजबूर हो जाते हैं।

90 साल की उम्र तक वो अपने दांत और बाल भी खो बैठते हैं। उनको किसी चीज का स्वाद नहीं आता। इसके अलावा वे अपने दोस्तों, परिवार वालों और रोजमर्रा की चीजों के नाम भी भूल जाते हैं।

बाद में मैंने विभिन्न उम्र वाले 5-6 लोगों को देखा। कई लोगों ने मुझे अमर लोगों से मिलवाया, लेकिन उनको हम जैसे लोगों से मिलने में बिलकुल रुचि नहीं थी।

इसलिए यह सब देखकर मेरी अमर रहने की इच्छा समाप्त हो गई।

❑❑

6

इंग्लैंड वापसी

मैं उस देश में करीब तीन महीने रुका था। वहां के राजा भी मुझसे बहुत प्रसन्न रहते थे, किंतु अब मैं वापस जाना चाहता था। 6 मई, 1709 में मैंने राजा और दोस्तों से विदा ली। राजकुमार ने मुझे वहां के बंदरगाह गिलागुस्टाल्ड तक पहुंचवा दिया।

करीब छह दिन बाद मैंने एक जहाज देखा, जो जापान जा रहा था। वह यात्रा पूरे 15 दिन की थी। हम जापान के एक बंदरगाह जामोची पर उतरे। वहां उतरकर मैंने लगनेग के राजा का पत्र दिखाया, जिस पर राजा की सील लगी हुई थी। जिस पर लिखा था–'एक राजा एक लंगड़े गरीब को उठा रहा है।'

वहां के जिलाधिकारी ने मेरा स्वागत किया। उन्होंने मुझे नौकर और घोड़ा-गाड़ी वगैरह दिए।

9 जून, 1709 में मैं नंगासेक पहुंचा, यह बहुत लंबी और दुखदायी यात्रा थी। यहां मुझे तुरंत ही कुछ डच मल्लाहों का साथ मिल गया, जो एमस्टरडम के थे और जिनका 450 टन का जहाज था। क्योंकि मैं हॉलैंड रह चुका था, इसलिए डच भाषा मुझे आती थी। हम केप ऑफ गुड होप तक पहुंचे। 10 अप्रैल, 1710 में हम एमस्टर डम पहुंचने में कामयाब हुए, मगर रास्ते में तीन लोगों की मृत्यु हो गई थी, जो बीमार थे। वहां से मैं इंग्लैंड के लिए रवाना हो गया।

16 अप्रैल को हमने डाऊंस में अपने जहाज का लंगर डाला। मैं तुरंत रैड्रिफ पहुंचा, जहां मेरे बीवी-बच्चे थे।

❑❑

चतुर्थ भाग

1

समुद्री डाकू

मैं करीब पांच महीने तक अपने परिवार के साथ रहा। उसके बाद मैंने एक और जोखिम भरी यात्रा करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। 7 सितंबर, 1710 को हम पोर्टस्माउथ के लिए निकले। रास्ते में कई मल्लाह बीमार पड़े, कुछ मर भी गए, इसलिए हमको नए मल्लाह लेने के लिए रुकना पड़ा। वहीं एक बहुत बड़ी गलती मुझसे हो गई थी। मुझे बाद में पता चला कि वो सब समुद्री लुटेरे थे।

मैंने जिन लोगों को जहाज में चढ़ाया था, वो सब डाकू थे। उन्होंने मेरे सारे साथियों को कोई नशीली चीज खिला दी और फिर जहाज को अपनी गिरफ्त में ले लिया।

एक दिन सुबह सब मेरे कमरे में दौड़ते हुए आए और मुझे चैन से बांध दिया गया। उन्होंने धमकी दी कि मैं हिला तो वो मुझे समुद्र में धक्का दे देंगे। उन्होंने मुझसे कसम खिलाई–'मैं आपका कैदी हूं और आपके सामने आत्मसमर्पण करूंगा।' फिर उन्होंने मेरा एक पैर पलंग से बांध दिया। उन्होंने मुझे जान से मारने की धमकी भी दी। उनका मकसद स्पनियार्ड को लूटने का था, जिसके लिए उन्हें और लोग चाहिए थे। उन्होंने कई हफ्तों तक जलयात्रा की, भारतीयों से भी व्यापार किया।

9 मई, 1711 को एक जहाज का आदमी, जिसका नाम जेम्स वैल्च था, मेरे केबिन में आया और बोला, "मेरे पास कप्तान का आदेश है कि तुमको किनारे पर उतारा जाए।"

उन्होंने मुझे एक छोटी-सी नाव में बैठाया और किनारे पर उतार दिया। पता नहीं वो कौन-सी जगह थी। मैं आगे की ओर बढ़ता चला गया। उस जमीन पर मुझे बहुत सारे पेड़, घास और खेत मिले। मैंने नाव लगाई और चलने लगा। वहां की मिट्टी पर मुझे इंसानों के पैरों के चिह्न मिले और

गाय-घोड़ों के पैरों के भी। थोड़ा आगे मुझे मैदानों में बहुत सारे जानवर दिखे, कुछ पेड़ पर बैठे थे। मैंने छिपकर उनको देखा। उनकी बकरे की तरह दाढ़ी थी और सीने पर बहुत बाल भी। कुछ जानवर नंगे थे अर्थात् उनके शरीर पर बाल नहीं थे। उनकी खाल हलके भूरे रंग की थी। उनकी कोई पूंछ नहीं थी। वो गिलहरी की तरह पेड़ पर चढ़-उतर रहे थे। ये जानवर दोनों लिंगों के थे और दिखने में विभिन्न रंगों के थे–जैसे कि लाल, काला, पीला और भूरा।

मैंने इस तरह के जानवर पहले नहीं देखे थे।

❑❑

पहले घोड़े ने मुझे अपने पीछे-पीछे चलने का इशारा-सा किया।

2
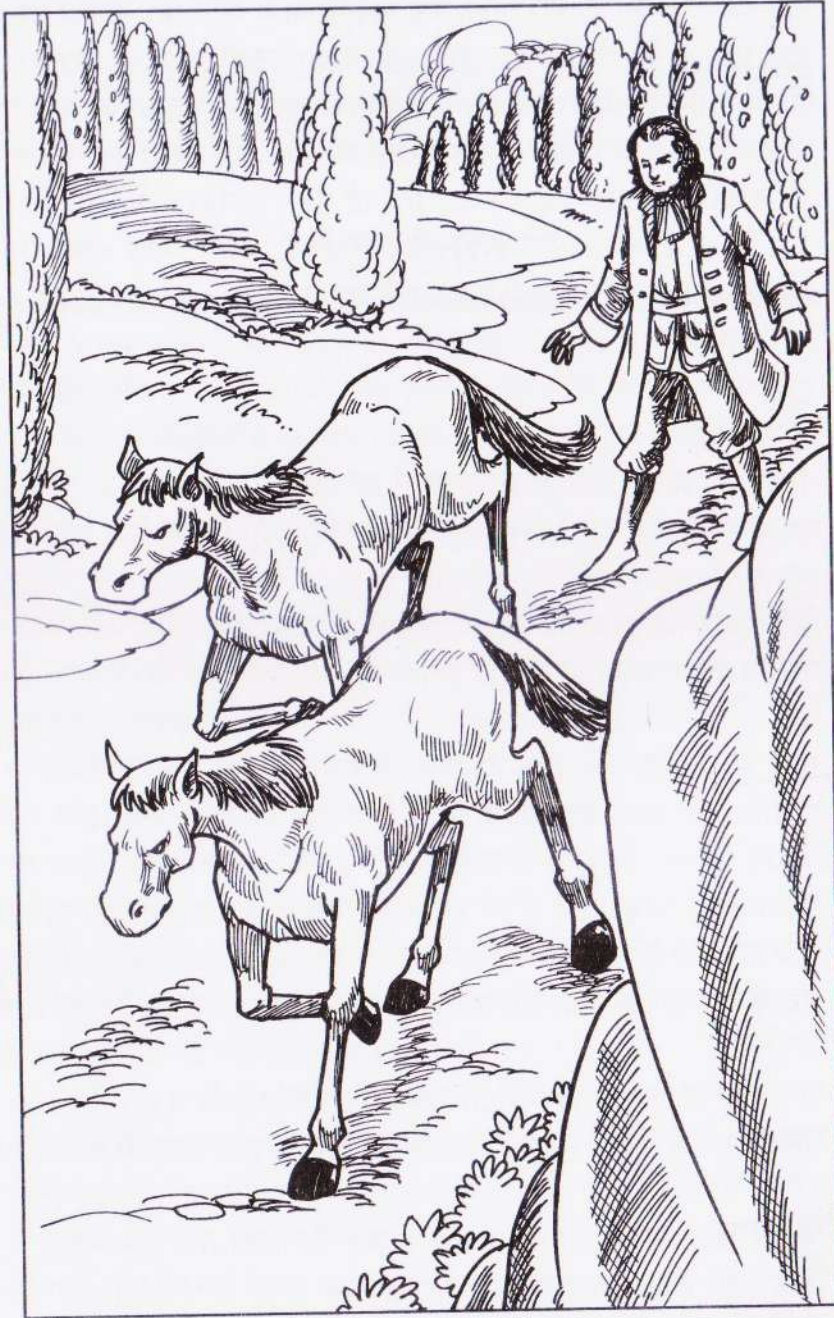
अनोखा प्राणी

आखिर में मैं उठा और चलने लगा। मुझे लगा कि कोई मुझे मिलेगा, जो मुझे रास्ता बता देगा। मैं अभी थोड़ी दूर ही पहुंचा था कि एक जंतु मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। उसने अपना अगला पैर उठाया। पता नहीं, उसने ऐसा क्यों किया था। बिना कुछ सोचे-समझे मैंने तुरंत तलवार निकाली और उस पर वार कर दिया। वो पीछे मुड़ा और जोर से चिल्लाया, जिसकी वजह से चालीस और भयानक जंतु सामने आ गए। मैं पेड़ों के पीछे छिपना चाहता था, किंतु वो मेरा पीछा करने लगे। मैंने उनको तलवार दिखाई, तो कुछ डरकर पेड़ पर चढ़ गए और कुछ सामान फेंकने लगे। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो एक और घोड़ा आ गया और वो भी हिनहिनाने लगा। फिर यह दोनों एक साथ चलने-फिरने लगे—जैसे दो इंसान आपस में बातें कर रहे हों। इसके बाद दोनों ने मेरी तरफ देखा, लग रहा था—जैसे वो सोच रहे हों कि मैं कहीं भाग न जाऊं। मैं उन जंतुओं की हरकतों को देखकर हैरान था। जैसे ही मैं आगे चलने लगा, वो दोनों घोड़े मेरे पास आए और मुझे अपने पैरों के जूते से छूने लगे। वो मेरे कोट और मेरी टोपी को देखने लगे। मैंने अपनी टोपी निकाली, लहराई और दोबारा पहन ली। यह देखकर वो बहुत खुश हुए। इसी बीच वो हिनहिनाकर एक-दूसरे से बात भी कर रहे थे। एक शब्द था 'याहू', जिसे वो बार-बार दोहरा रहे थे। मैंने भी वो शब्द कई बार दोहराया। फिर वो एक और शब्द बोले, जिसे मैं ठीक से न बोल सका, लेकिन वो होयहनहनम जैसा था। उसको बोलना कठिन था। वो मुझे ऐसे इंसान लग रहे थे, जो कोई खेल खेल रहे हों। फिर वो जाने लगे। पहले घोड़े ने मुझे अपने पीछे आने का इशारा-सा किया। जब भी मेरी चाल धीमे होती, वो हुअअ...हुअअ...करने लगते। शायद वो चाहते थे कि मैं तेज चलूं, किंतु मैं थका हुआ था और घोड़े यह समझ गए थे। पहले घोड़े ने मुझे अपने पीछे-पीछे चलने का इशारा-सा किया।

3

मेरे मालिक का घर

करीब तीन मील चलने के बाद हम एक ऐसी इमारत के पास पहुंचे, जो टिंबर की बनी थी। उसकी छत बहुत नीची थी। उस घर के बाहर मैंने कई बदसूरत जानवरों को देखा, जिन्हें मैं पहले ही उस मैदान में भी देख चुका था। वो सब उस घर से बाहर बंधे थे। घर का मालिक कोई बड़ा आदमी होगा और ये जानवर पालतू होंगे।

वो घोड़ा घर के अंदर गया और मैं उसके पीछे। वहां बहुत सारे घोड़े थे। कुछ बैठे थे, कुछ खड़े थे और कुछ घर की सफाई कर रहे थे। मैंने सोचा, 'इस आदमी ने सफाई के लिए घोड़े क्यों रखे हैं, नौकर क्यों नहीं?' इससे एक बात तो साबित हो गई थी, वो कितना बुद्धिमान होगा। उसके कुछ देर बाद एक और घोड़ा अंदर आया और जोर से हिनहिनाया, उसका अंदाज हुक्म देने वाला था, वह काफी शक्तिशाली था। घोड़ों ने उसको जबाव भी दिया।

वहां तीन और कमरे भी थे और मुझे दूसरे कमरे में इंतजार करने के लिए कहा गया। इतनी देर में मैं घर के मालिक और मालकिन के लिए उपहार लेकर तैयार था। कुछ चाकू, कंगन, गले का हार और गिलास आदि चीजें मैंने उपहार के रूप में तैयार किए थे। घोड़े तीन चार बार हिनहिनाए, लेकिन जबाव में मैंने किसी इंसान के बोलने की आवाज नहीं सुनी, जिसकी मैं उम्मीद कर रहा था। फिर एक घोड़े ने मुझे तीसरे कमरे में जाने का संकेत दिया। मैं कमरे में जाकर हैरान हो गया। वहां एक घोड़ी बछड़े और बछड़ी के साथ बैठी थी। मुझे देखते ही वो अपनी जगह से उठी और मेरे हाथों और चेहरे को देखने लगी। मैंने 'याहू' शब्द को कई बार सुना।

फिर वो दोनों बाहर चले गए। वो चाहते थे कि मैं उनके पीछे-पीछे चलूं। वहां बहुत सारे और भी जानवर थे, जिन्हें एक रस्सी से बांधा गया था और वो रस्सी उनके गले में थी। वो खाने को अपने पैरों में फंसाकर दांतों से काट

वो घोड़ा घर के अंदर गया और मैं उसके पीछे। वहां बहुत सारे घोड़े थे। कुछ बैठे थे, कुछ खड़े थे, और कुछ घर की सफाई कर रहे थे।

काटकर खा रहे थे। फिर सबसे बड़े मास्टर ने एक बड़े जानवर को खोलने का आदेश दिया। उस जानवर को मेरे पास खड़ा किया गया। फिर हम दोनों की तुलना होने लगी। उन्होंने भी याहू शब्द का प्रयोग कई बार किया।

मैं उस जानवर के चेहरे को देखकर हैरान था। उस जानवर की कद-काठी इंसान की तरह थी। उसका चेहरा चौड़ा और सपाट था—छोटी-सी नाक और बड़े-बड़े होंठ। उसके पंजे और मेरे पैरों में बस इतना अंतर था कि उसके नाखून बहुत बड़े थे, हाथ भूरे और पीठ पर बाल थे। मैं खुश था कि वो लोग मेरे पैर नहीं देख पाए, क्योंकि मैंने जूते पहने हुए थे। मैंने कपड़े भी पहने हुए थे। फिर सब याहू चिल्लाने लगे। तब मुझे समझ आया—याहू उस बदसूरत जानवर का नाम था।

उनमें से एक नौकर ने मुझे जड़ खाने को दी। मैंने उसको सूंघकर वापस कर दिया। फिर वो याहू के घर में जाकर गधे का गोश्त मेरे लिए ले आया। मैंने वो भी नहीं खाया।

आखिर में खाने के लिए मुझे भूसा और ज्वार दिए गए। मैं बहुत परेशान हो रहा था। याहू को उसके कमरे में जाने को बोला गया। फिर मास्टर ने अपना पैर उठाकर मुंह में डाला, शायद वो जानना चाहता था कि मैं क्या खाऊंगा। फिर वहां से एक गाय निकली और मैंने उसका दूध पीने का संकेत उनको दिया। एक बड़े बर्तन में मेरे लिए दूध आ गया, जिसे पीकर मेरी हालत संभली। शाम को एक मेहमान आया वो एक बूढ़ा घोड़ा था। उसकी टांग में चोट लगी थी, इसलिए वो एक घोड़ागाड़ी में आया था।

जब सारे घोड़ों ने खाना खा लिया तो वो मुझे पढ़ाने लगे। मैंने कुछ शब्द सीखे जैसे—ओट्स, दूध, आग और पानी। फिर मेरे टीचर ने इशारों से पूछा कि मैं क्या खाना चाहता हूं। उनकी भाषा में ओट्स को 'हलउनन' कहते थे। जब दो-तीन बार उस शब्द को दोहराया गया तो मैंने सोचा क्यों न ओट्स की ब्रेड बनाकर दूध से खाई जाए।

कभी-कभी मैंने कुछ छोटे पेड़-पौधों को उबालकर सलाद की तरह खाया। मैंने एक खरगोश और चिड़िया का गोश्त भी खाया था। मैं लगभग तीन साल तक वहां रहा लेकिन कभी बीमार नहीं पड़ा था। मैं घोड़ों के पास ही एक झोंपड़ी में सोता था। वहां बहुत अच्छी नींद आती थी।

❑❑

4

मैंने उनकी भाषा सीखी

मेरा मकसद उनकी भाषा सीखना था। मेरे मालिक उनके बच्चे और वहां के सारे नौकर-चाकर मुझ पढ़ाने में लगे थे। बोलते समय वो अपनी नाक और गले का इस्तेमाल करते थे। वो मुझे याहू समझते थे, लेकिन मेरा रहन-सहन, साफ-सफाई उनके जानवरों से बिल्कुल अलग था। वो मेरे कपड़ों को देखकर परेशान थे, क्योंकि में उन्हें कभी नहीं उतारता था।

मेरा मालिक मेरी कहानी सुनना चाहता था, इसलिए वो चाहता था कि मैं उसका शब्दकोश सीखूं। अगले दस दिनों में मैं उनकी काफी भाषा समझने लगा था। तीन महीने बाद मैं सारे सवालों का जबाव देने में परिपक्व हो गया था। मैंने उनको पूरी कहानी सुनाई कि किस तरह मेरे साथियों ने मुझे छोटी नाव में बैठाया और समुद्र में छोड़ दिया।

होयहनहनम का मतलब उनकी भाषा में 'घोड़ा' था—अर्थात् 'सबसे परफेक्ट'। बहुत सारे घोड़े-घोड़ियां हमारे घर पर मिलने आए। जब उन्हें पता चला कि यहां कोई याहू है, जो होयहनहनम की तरह बोलता है।

जो होयहनहनम मेरे मालिक के यहां मिलने आए, उन्हें विश्वास था कि मेरे शरीर पर जो कपड़े थे, वो उनके याहू के नहीं थे। लेकिन मेरे कपड़ों का रहस्य एक रात खुल गया। यह पंद्रह दिन पहले की बात थी।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया था कि हर रात जब सब लोग सो जाते थे, तो मैं अपने कपड़े उतारकर अपने बदन को ढक कर सो जाता था। एक दिन सुबह मालिक ने मुझे बुलाने के लिए एक नौकर को भेजा। मैं सोया हुआ था मुझे बिना कपड़ों में देखकर वो चिल्लाया। मालिक को जाकर उसने बड़ा अजीब-सा विवरण दिया। उसने बताया, 'वो कुछ अलग है, जब वो सो रहा था, तो उसका कुछ शरीर सफेद, कुछ पीला और कुछ भूरे रंग का था।'

मैं तुरंत उठकर मालिक के पास पहुंचा। मैंने अपना रहस्य किसी को नहीं

बताया था, क्योंकि मैं उनके याहू जैसा नहीं था। मगर अब मेरे सामने कोई रास्ता नहीं बचा था। वैसे भी मेरे कपड़े और जूते खराब हो चुके थे।

'मेरे देश में सारे लोग अपने शरीर को कपड़ों से ढककर रखते हैं, ताकि सर्दी, गर्मी और हवा से बच सकें,' मैंने उनको समझाने की कोशिश की।

इसके अलावा मैंने कहा, 'मैं अपने कपड़े उतार सकता हूं, लेकिन कुछ अंगों को हमेशा ढककर रखूंगा, क्योंकि हमें बचपन से यही सिखाया गया है।'

उसके बाद मेरा मालिक बोला, 'तुमने जो कुछ भी कहा, वो बहुत अजीब है, जो चीज तुमको प्रकृति ने दी है, वो क्यों चाहेगी कि तुम उसे छुपाओ। हम लोग तो अपने शरीर को देखकर शर्मिंदा नहीं होते, इसलिए तुमको अपना शरीर हमको दिखाना ही होगा।'

मैं बहुत असमंजस में था, मगर क्या करता। उसके बाद मैंने अपने मौजे और जूते उतारे। मालिक से अनुरोध किया कि वह किसी को यह बात न बताए। मैंने उनको यह भी कहा कि वो मुझे 'याहू' कहकर न बुलाएं।

❑❑

5

याहू और उनकी संस्कृति

मेरे मालिक ने मेरी प्रार्थना पर गौर किया और कहा कि वो किसी को नहीं बताएंगे। साथ ही उनकी भाषा और अच्छी तरह सीखने की बात भी कही। रोजाना वो मुझसे तरह-तरह के सवाल पूछते थे।

मैंने अपने बारे में उनको जानकारी दी—'मैं दूर देश से आया हूं, मेरे साथ पचास और लोग भी हैं। हम जहाज में बैठकर आए हैं, जो लकड़ी का बना था और इस घर से काफी बड़ा है। फिर हमारे बीच लड़ाई-झगड़ा हुआ और उन्होंने मुझे इस किनारे छोड़ दिया और आप लोगों ने मुझे बचा लिया।'

उन्होंने मुझसे पूछा, 'यह कैसे बेवकूफ जानवर हैं, जो याहू से मिलते हैं। एक लकड़ी का जहाज बना सकते हैं।'

मैं बोला, 'हमारे देश के याहू बहुत चालाक होते हैं। वो हमारे देश में उस तरह शासन करते हैं, जिस तरह होयहनहनस होते हैं?' मास्टर ने पूछा।

'जी हां।' मैंने कहा, 'हम उनको घोड़ा बुलाते हैं, लेकिन वो इतने चालाक नहीं होते। हम उनके ऊपर सवारी करते हैं। हमारे देश के घोड़े बड़े मेहनती होते हैं और वो मरते दम तक काम करते हैं।'

मेरे मालिक को यह सब अच्छा नहीं लगा और वो बोले, 'याहू ऐसा कैसे कर सकते हैं?'

उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसा देश है, जहां याहू चालाक और घोड़े बेवकूफ होते हैं।

'यह समझना बेहद मुश्किल है, मैं जब वापस जाकर अपने देश में यह बताऊंगा तो वो भी नहीं मानेंगे,' मैंने थोड़ा झिझकते हुए कहा।

काफी सालों के बाद मेरे मालिक ने कहा, 'तुम्हारे देश के याहू बहुत बुद्धिमान होते हैं। तुम्हारे देश के याहू पैसे और जमीन के लिए लड़ते हैं और हमारे देश के याहू खाने के लिए। हमारे याहू सफेद पत्थर उठाते हैं और फिर

मेरे मालिक ने कहा, 'हमारे याहू इतने बुद्धिमान नहीं होते, तुम्हारे देश के याहू ज्यादा बुद्धिमान हैं।'

अपने अस्तबल में ले जाकर रख देते हैं, किंतु तुम्हारे याहू से नफरत करते हैं। बिना किसी कारण के तुम्हारे याहू भी लड़ते हैं। हमारे याहू अपने हाथ- पैरों से लड़ते हैं, तुम्हारे तलवार से। मुझे लगा था कि मास्टर मेरे देश के बारे में सही कह रहा था।

मेरे मालिक ने कहा, 'हमारे याहू इतने बुद्धिमान नहीं, तुम्हारे देश के याहू ज्यादा बुद्धिमान होते हैं।'

'कुछ और चीजें भी हैं, जिन पर मैंने ध्यान दिया है।' मास्टर बोला, 'पुरुष याहू हमेशा महिला याहुओं को परेशान करते हैं। और जानवर तो सब ठीक हैं, लेकिन हमारे याहू गंदे होते हैं। हमारे याहू लालची और मतलबी भी होते हैं, क्या तुम्हारे भी ऐसे होते हैं।

'मैं आपको होयहनहनम कैसे रहते हैं, उसके बारे में बताता हूं। होयहनहनम सब बच्चों से प्यार करते हैं ताकि जनसंख्या न बढ़े, किंतु हमारे घोड़े दो-तीन बार से ज्यादा खाते हैं। 18 साल की उम्र के बाद वो दूध और जुआर खा सकते हैं। बच्चों को मजबूत बनाने की ट्रेनिंग दी जाती है।

'उनके घर भी साधारण होते हैं। वो कपड़े नहीं पहनते, किताब नहीं पढ़ते, कुछ लिखते नहीं। वो कोई नाच-गाना, संगीत और प्यार के लिए शादी नहीं करते। वो अलग-अलग रंगों की घोड़ियों के साथ जोड़ी नहीं बनाते, क्योंकि इससे उनके बच्चे भद्दे दिखते हैं।

'हर चार साल में पूरे देश के होयहनहनम आपस में मिलकर एक-दूसरे से मिलते हैं। यहां वो आपस में बच्चे बदल लेते हैं। इस तरह जिस शहर में अनाज कम होता है, वो दूसरे से खरीद लेता है।'

मेरा इस देश में समय अच्छा बीता । मैं पूरे तीन साल यहां रहा। यहां कोई सरकार नहीं, चोर-डाकू-पुलिस नहीं थी। मैं खुश था और मेरी शक्ल यहां के याहू से मिलती थी—जब पानी में मैंने अपनी शक्ल देखी। मैं होयहनहनम बनना चाहता था।

❑❑

6

परिवार से पुन:मिलन

एक दिन मेरे मालिक होयहनहनमस की बड़ी बैठक से लौटकर आए, जो हर चार साल में होती है। उस दिन वो खुश नहीं थे। थोड़ी देर बैठने के बाद वो बोले, 'पता नहीं, मैं इस बात को कैसे बोलूं? लेकिन आज की जनरल असेंबली की बैठक में यह सवाल उठा था कि आखिर मैंने तुमको अपने परिवार में क्यों रखा है और तुमसे इतनी बातचीत क्यों करता हूं? बैठक के सदस्यों का कहना है, अब उसे उसके देश में वापस भेज दो। अब मैं लाचार हूं, तुमको नहीं रख सकता। तुम अपने जहाज का इंतजाम करो और अपने देश वापस जाओ। हां, इसके लिए तुम मेरे नौकरों की मदद जरूर ले सकते हो।'

अगले दो महीने में मेरी नाव तैयार हो गई। उसके बाद मैंने सबसे पहले समुद्र के किनारे पर जाकर जहाज के लोगों की खोजबीन की। मैं एक ऊंचाई पर खड़ा हो गया और चारों तरफ देखने लगा। मैंने अपनी दूरबीन निकाली और पचास मील की दूरी पर एक द्वीप देखा।

आखिर मेरे जाने का दिन भी आ गया। मैंने मालिक से इजाजत ली और चल पड़ा। चलते समय मुझे बड़ा दुख हो रहा था। मुझे एक घंटा टाइट का इंतजार भी करना पड़ा। मैं मास्टर से मिलने पहुंचा। जैसे ही मैंने उनके पैर चूमने चाहे, उन्होंने अपना पैर ऊपर उठा लिया। मैंने होयहनहनमस से भी इजाजत ली और चल पड़ा।

15 फरवरी, 1714 को सुबह नौ बजे मैं नाव लेकर निकला। जहां मैंने अपनी नाव रोकी, वहां मुझे कोई मनुष्य और जीव-जंतु नहीं दिखा। मेरे पास कोई हथियार नहीं था और मैं दूसरे देश में घुसने में डर रहा था। मैंने वहीं पड़ी मछलियां खाकर गुजारा किया। हां, मुझे साफ पानी का एक झरना जरूर मिल गया था, जिसका पानी पीकर मैंने अपनी प्यास बुझाई।

चौथे दिन मुझे अपने से 500 मीटर की दूरी पर कोई 500-600 लोग

दिखाई दिए, जो बिल्कुल नंगे थे—उसमें आदमी, औरतें और बच्चे भी थे। वहां से धुआं उठ रहा था। उनमें से एक ने मुझे देख लिया और दूसरों को बता दिया। उनमें से पांच लोग मेरी तरफ आने लगे। मैं तुरंत अपनी नाव के पास पहुंचा। मैं थोड़ी दूर ही पहुंचा था कि उन्होंने पीछे से तीर चलाया, जो मेरे पैर में आकर लगा।

मैं नाव चलाता रहा। तभी उत्तर की तरफ से एक जहाज आता दिखाई दिया। मैंने द्वीप में वापस जाने का इरादा किया, क्योंकि वहां मेरी जान को खतरा नहीं था। मैंने द्वीप के पास नाव उतारी और वहां एक चट्टान पर जाकर बैठ गया। कुछ मल्लाहों ने मुझे वहां देख लिया था।

"तुम कौन हो?" वे पूछने लगे। उनकी भाषा पारचोंगिस थी।

क्योंकि मुझे वह भाषा आती थी, तो मैंने कहा, "मैं एक गरीब याहू हूं और होयनहमहस ने मुझे वापस भेज दिया है।"

मगर वो नहीं माने, मुझसे सवाल करते रहे। वो अजीब-सी एक आवाज निकाल रहे थे, जो बेहद बुरी थी। मैं घोड़े की तरह हिनहिनाने लगा, तो वे मुझको पागल समझने लगे। वो मुझे बांधकर अपने जहाज पर ले गए। उस जहाज का कप्तान अच्छा आदमी था। वो मुझसे सवाल करता रहा और उसने मुझे खाना भी खिलाया। उसके बाद एक केबिन से निकलकर मैं नाव में बैठा और चल पड़ा। तभी एक मल्लाह ने मुझे देख लिया और वापस केबिन में बंद कर दिया।

अगले दिन कप्तान ने मुझसे बात की। वो मुझसे पूछना चाहता था—मैं कौन हूं। मैंने उनसे बच्चे की तरह बात की। 'यह तो पूरा याहू है'—मैंने सोचा, 'यह मुझे समझ नहीं पाएगा।' मैंने एक भी झूठ नहीं बोला।

ऐसा कई दिनों तक चला। आखिर में कप्तान को मेरी बातों पर यकीन हो गया। जब जहाज पुर्तगाल पहुंच गया, तो कप्तान मुझे अपने घर ले गया। सबसे पहले तो मैं अपने कमरे से ही नहीं निकला, क्योंकि मुझे याहुओं का डर था। मगर अगले दस दिनों में मेरी हालत ठीक होती गई।

एक दिन कप्तान ने मुझे इंग्लैंड वापस जाने को कहा, "तुम्हारी बीवी-बच्चे परेशान होंगे। तुमको वापस जाना चाहिए।"

"मैं वहां नहीं जाना चाहता," मैंने कहा, "मैं किसी द्वीप पर अकेला रहना चाहता हूं।"

"मुझे नहीं लगता, तुमको ऐसी कोई जगह मिलेगी," कप्तान बोला।

हम दोनों में बहुत बहस हुई। फिर मैं इंग्लैंड जाने को राजी हो गया।

5 दिसंबर, 1715 सुबह 9 बजे हमने डोरिस पर लंगर डाला और दोपहर 3 बजे मैं अपने घर रोथरहिथ पहुंच गया।

घर में घुसते ही मेरी बीवी ने मुझे अपनी बांहों में भरा और चूम लिया। मेरी आदत तो खराब हो ही चुकी थी। मैं उन लोगों के साथ ठीक से रह न सका। उनकी दुर्गंध मुझे परेशान करती थी।

पांच साल बीत चुके थे, मगर न मैंने उनके साथ खाया, न एक ही कप में चाय वगैरहा पी। मैंने अपने पैसों से दो घोड़े खरीदे जो मुझे समझने भी लगे। मैं रोज उनसे चार घंटे बातें किया करता था। काफी दिनों के बाद मैं सामान्य हुआ। इसके बाद हम सब ठीक से रहने लगे।

❑❑❑

कहानी पर आधारित प्रश्न

प्रथम भाग

(लिलीपुट की यात्रा)

1. गुलिवर का छोटे लोगों से बचकर जाने का क्या प्लान था?
2. जब गुलिवर रस्सी से बंधा था, तो उसको तीर से क्यों मारा गया?
3. गुलिवर को राजधानी में कैसे लाया गया?
4. गुलिवर और राजा की मुलाकात का वर्णन करो।
5. गुलिवर को कहां लाया गया और उसने क्या किया?
6. राजा के बारे में वर्णन करो।
7. गुलिवर को छह लोग क्यों दिए गए? गुलिवर ने उसके साथ क्या किया?
8. गुलिवर के बारे में क्या बातचीत हो रही थी?
9. गुलिवर के पास प्राप्त चीजों का विवरण दो?
10. गुलिवर ने कैसे साबित किया कि वो दयालु है?
11. गुलिवर को किन बातों का पालन करना था?
12. लिलीपुट में दो गुट कौन से थे? उनको कैसे पहचाना जाता था?
13. क्या बल्फस्कयू का राजा लिलीपुट के लोगों को खत्म करने के लिए युद्ध कर रहा था?
14. गुलिवर को नारडेक का खिताब कैसे मिला?
15. एडमिरल की नफरत का क्या कारण था?
16. बल्फस्कयू के लोग लिलीपुट क्यों आए और गुलिवर ने उन दोनों को कैसे मनाया?
17. गुलिवर के ऊपर क्या आरोप लगे थे?
18. एडमिरल और ट्रेजरार को क्या दंड मिला?
19. गुलिवर को मारने का प्लान किसने बताया?
20. गुलिवर आखिर वापस क्यों गया?

विशेष रूप से बच्चों के लिए तैयार
मजेदार कहानियां और प्रेरक जीवनियां
संपूर्ण रंगीन चित्रों सहित

- संपूर्ण रामायण (हार्ड बाउंड)
- संपूर्ण रामायण (पेपर बैक)
- रामायण-बालकाण्ड
- रामायण-अयोध्याकाण्ड
- रामायण-अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड
- रामायण-सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड
- रामायण-उत्तरकाण्ड, लव-कुशकाण्ड
- जातक कथाएं
- ईसप की कहानियां
- मुल्ला नसरुद्दीन
- शेखचिल्ली की कहानियां
- पंचतंत्र की प्रेरक कथाएं
- पंचतंत्र की रोचक कहानियां
- पंचतंत्र की मनोरंजक कथाएं
- पंचतंत्र की नैतिक कथाएं
- अकबर-बीरबल की कहानियां
- अकबर-बीरबल के मनोरंजक किस्से
- अकबर-बीरबल के गुदगुदाते किस्से
- अकबर-बीरबल के लतीफे
- परियों की कहानियां
- हितोपदेश
- दादी मां की कहानियां
- अरेबियन नाइट्स की कहानियां
- विक्रम बेताल
- तेनालीराम की कहानियां
- नाना-नानी की कहानियां
- 33 शिक्षाप्रद कहानियां
- भगवान परशुराम
- श्रीराम कथा
- भगवान् बुद्ध
- लव-कुश
- मदर टेरेसा
- महर्षि वाल्मीकि
- यीशु मसीह
- मां दुर्गा
- गुरु नानकदेव
- भक्त प्रह्लाद
- श्रीविष्णु
- गायत्री
- वीर हनुमान
- शिव-पार्वती
- श्री कृष्ण लीला
- श्री गणेश
- भगवान महावीर
- मां गंगा
- मां लक्ष्मी
- शिरडी साईंबाबा के चमत्कार
- गुरु गोबिन्द सिंह
- देवर्षि नारद
- एकलव्य
- भक्त ध्रुव
- द्रौपदी
- भक्त सूरदास
- महाबली भीम
- गोस्वामी तुलसीदास
- वीर कर्ण
- डॉ. भीमराव आम्बेडकर
- शहीदे आजम भगतसिंह
- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
- चन्द्रशेखर आजाद
- छत्रपति शिवाजी
- मां सरस्वती
- मीराबाई
- महात्मा गांधी
- स्वामी विवेकानन्द
- सती सावित्री
- शकुन्तला
- वीर अभिमन्यु
- राजा हरिश्चन्द्र
- भीष्म पितामह

बड़े साइज में

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, 27611546

ऑल-टाइम ग्रेट क्लासिक्स

गुलिवर की यात्राएं

गुलिवर को सफर करना बहुत अच्छा लगता था। गुलिवर की इसी आदत के कारण उसका नुकसान भी हुआ, फिर भी उसने तरह-तरह की यात्राएं कीं।

पहली यात्रा में वह अपने जहाज से लिलिपुट की दुनिया में पहुंच गया, जो आदमी का 1/12 वां हिस्सा थे। वहां एक दोस्त की सहायता से उसने नाव ठीक की और अपने गांव वापस गया।

दूसरी यात्रा के दौरान समुद्री तूफान के कारण वह रास्ता भटक गया और एक ऐसे किसान के पास पहुंच गया, जो 72 फीट लंबा था।

तीसरी यात्रा में गुलिवर लपुटा पहुंचा और उसे समुद्री [illegible] एक पथरीले द्वीप पर

[illegible] का कप्तान बनकर [illegible] विचित्र जानवरों की [illegible] का राज था और कुछ [illegible]।

Gulliver ki Yatraaye | All Time Great Classics in Hindi

8131025772

मनोज पब्लिकेशन्स

ISBN 978-81-310-2577-2

sawanbooks ₹ 80